www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13
दयानन्दाब्द १९०,
शक सं. १९३५,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११४

वर्ष-12 | अंक-08 | श्रावण कृ. 10 से श्रावण शु. 9 सं. 2070 वि. / 1 से 15 अगस्त 2013 / अमरोहा, उ.प्र. | पृ.-12 | प्रति- 5/-

काठमाण्डू (नेपाल) स्थित शंकर होटल में अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी कला मंच द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अतिथियों द्वारा आर्यावर्त केसरी के नवीन अंक के लोकार्पण का एक दृश्य - केसरी।

डरबन चलो

दक्षिण अफ्रीका में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारियां जोरों पर

डॉ० उषा देसाई, अध्यक्ष
डॉ० सत्यविलास, निर्देशक
डरबन (द० अफ्रीका)।

इस वर्ष २८ नवम्बर से १ दिसम्बर तक दक्षिण अफ्रीका के महानगर डरबन के सिटी हॉल में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि पिछले वर्ष नवम्बर २०१२ में दिल्ली के रोहिणी स्थित स्वर्ण जयन्ती पार्क में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के बाद यह भव्य समारोह डरबन में हो रहा है।

सम्मेलन समिति के अध्यक्ष व निर्देशक के अनुसार 'वेदों का सार्वभौमिक संदेश' इस महासम्मेलन की मुख्य थीम होगी। महासम्मेलन के विषय में वेबसाइट-www.apssa.co.za पर महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं। आयोजन समिति ने.... शेष पृष्ठ-८ पर

आर्य प्रतिनिधि सभा, अमेरिका द्वारा

कनाडा में २३वां आर्य महासम्मेलन

गिरीश खोसला वानप्रस्थ
कनाडा।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के तत्वावधान व वैदिक कल्चर सेन्टर, आर्यसमाज मरखम, आर्यसमाज टोरण्टो व आर्यसमाज ग्रेटर टोरेण्टो द्वारा आयोजित २३वां आर्य महासम्मेलन १ से ४ अगस्त तक वैदिक कल्चर सेन्टर आर्यसमाज मन्दिर ४३४५, १४ एवेन्यू मरखम ओन्टेरियो एल ३ आर ओ जे- २, कनाडा में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न होगा। शेष पृष्ठ-८ पर

हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य पर नेपाल में हुआ

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी महासम्मेलन

डॉ० अशोक कुमार आर्य/
डॉ० बीना रुस्तगी
काठमाण्डू (नेपाल)।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच द्वारा नेपाल की राजधानी काठमाण्डू में चारदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें भारत से लगभग ११५ हिन्दी साहित्यसेवियों ने सहभागिता की। ऐतिहासिक शंकर होटल में ९ से ११ जून तक चले इस समारोह का मुख्य विषय 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य' था, जिसमें देश-विदेश के अनेकानेक हिन्दी विद्वान, साहित्य मर्मज्ञ, हिन्दीसेवी शिक्षक-शिक्षिकाएं, साहित्यकार, पत्रकार, सम्पादक आदि ने सहभागिता की। इस अवसर पर सन् २०१३ में प्रकाशित हिन्दी कृतियों का लोकार्पण किया गया। समारोह में हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य पर संगोष्ठी के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी काव्य गोष्ठी भी सम्पन्न हुई। इस अवसर पर अनेक हिन्दीसेवियों को साहित्यकार सम्मान- २०१३ से सम्मानित किया गया।

काठमाण्डू के चार सितारा ऐतिहासिक शंकर होटल के सुसज्जित वातानुकूलित विशाल सभागार में यह भव्य आयोजन यादगार बन गया। महासम्मेलन में विश्व के विभिन्न देशों में हिन्दी की दशा व... शेष पृष्ठ-८ पर

स्वामी दर्शनानन्द निर्वाण शताब्दी वर्ष के आयोजन

सुमन कुमार वैदिक
नई दिल्ली।

निशुल्क गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रवर्तक स्वामी दर्शनानन्द ने अनेक विषयों पर अधिकार पूर्वक लेखनी चलायी। लेखक से बढ़कर मिशनरी, तपस्वी, त्यागी व तड़प वाले समाजसेवी थे। महर्षि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा ने यह शताब्दी पूरे भारत वर्ष में विभिन्न स्थानों पर मनाने की योजना तैयार की है तथा परोपकारिणी सभा द्वारा शताब्दी पर्व पर व्याख्यान देते हुए अधिकारी, विद्वान उपलब्ध कराने का निश्चय किया है। इसी क्रम में दिल्ली में पहला व्याख्यान आर्यसमाज मयूर विहार द्वारा ११ अगस्त को प्रातः ११ बजे आयोजित हो रहा है जिसमें आर्यसमाज के चलते फिरते इतिहास, दो सौ पचास पुस्तकों के.. शेष पृष्ठ-८ पर

नवगीत पुरस्कार से डॉ. माहेश्वर तिवारी सम्मानित

मुरादाबाद (उ.प्र.)। सुप्रसिद्ध नवगीतकार डॉ. माहेश्वर तिवारी को बनारस में डॉ. शम्भूनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार प्रदान किया गया। विदित हो कि डॉ. शम्भूनाथ सिंह नवगीत पुरस्कार पिछले ग्यारह वर्षों से नवगीत विधा में महारथ हासिल, कवियों को प्रदान किया जाता है। नवगीतकार डॉ. तिवारी को पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शॉल व ग्यारह हजार रुपये भेंट किये गये। डॉ. तिवारी ने जानकारी देते हुये बताया कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, शेष पृष्ठ-८ पर

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में

बोधोत्सव २६ से

रामनाथ सहगल
नई दिल्ली।

गत वर्षों की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वर्ष २०१४ में २६ से २८ फरवरी तक किया जायेगा। इस अवसर पर आर्यजन युगप्रवर्तक, स्वराज्य के सर्वप्रथम संदेशवाहक व महान वेदज्ञ ऋषिवर दयानन्द की पावन जन्म स्थली तथा बोधस्थली (वह शिवालय, जहां उन्हें सच्चे शिव को जानने की जिज्ञासा जागी।) देख सकेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मा. ट्रस्ट ने आर्य संगठनों से अपील की है कि अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ कार्यक्रम में ऋषि जन्मभूमि टंकारा पधारें। आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस
पो.-कन्या गुरुकुल, पिन-२०४१०४, जिला-हाथरस (उ.प्र.)

प्रवेश सूचना

शिक्षा-प्ले ग्रुप से लेकर वेदालंकार/विद्यालंकार (बी.ए.) तक, प्रथमा (८) से लेकर आचार्य (एम.ए.) तक, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद की गायन, वादन में प्रभाकर (बी.ए.) तक निःशुल्क शिक्षा। आई.टी.आई. कोपा (कम्प्यूटर), सिलाई-कटाई ट्रेड, एन.सी.वी.टी. द्वारा मान्य। प्ले ग्रुप से हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, तीनों भाषायें। प्रातः सायं यज्ञ, योगासन, जूडो कराटे एवं व्यायाम। दोनों समय दाल, सब्जी, घृत, दूध सहित भोजन व्यय १०००.०० मासिक। आवासीय सुविधा एवं सुरक्षा। सुरम्य, प्राकृतिक, रमणीक विस्तृत भूखण्ड में संस्कारवान् शिक्षा। गुरुकुल आगरा-अलीगढ़ राष्ट्रीय मार्ग संख्या-९३ पर सासनी-हाथरस के मध्य स्थित। प्रवेश हेतु सम्पर्क करें।

कमला स्नातिका — मोबा.: 9897479919, 9258040119
डॉ. पवित्रा विद्यालंकार — मोबा.: 09212226462
सविता वेदालंकार — मोबा.: 08006340583

www.thearyasamaj.org

हर्षोल्लास से की 'एक शाम ऋषि के नाम'

जयसिंह वर्मा
नई दिल्ली।

आर्यसमाज सागरपुर द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 3 जून को 'एक शाम ऋषि के नाम' कार्यक्रम अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसके अन्तर्गत सायं 5.30 से 6.30 तक यज्ञ, 6.30 से 8.00 बजे तक राजवीर शर्मा ने ऋषिगाथा व भजन सुनाकर उपस्थित जनसमूह को भावविभोर कर दिया। तत्पश्चात् आचार्य रामनिवास गुणग्राहक का प्रवचन हुआ, जिसमें उन्हीं के द्वारा ऋषि के जीवन के कुछ संस्मरण सुनाए गये। इस समाज की ओर से दिल्ली सभा द्वारा 26 से 2 जून तक इस वर्ष के शिविर में कुछ युवक व युवतियों द्वारा भाग लेकर विशेष स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रूप से प्रधान जी, महामंत्री, प्रचार मंत्री अपने साथियों के साथ पधारे। प्रद्युम्न राजपूत, विधायक, द्वारिका विधानसभा, अपने सभी साथियों के साथ पधारे। स्थानीय महिला-पुरुष व आस-पास के सभी समाजों के प्रतिनिधि अधिकाधिक संख्या में उपस्थित हुए। अन्त में प्रधान जी द्वारा धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम को शान्तिपाठ के साथ सम्पन्न कराया गया। ऋषिभोज की विशेष रूप से व्यवस्था करायी गयी।

विश्वनाथ टेकड़ीवाल को दी श्रद्धांजलि

बी.एल. टेकड़ीवाल
मुम्बई।

राष्ट्रीयता तथा आध्यात्मिकता की अलख जगाने वाली संस्थाओं- श्रीमती शांतिदेवी विश्वनाथ टेकड़ीवाल फाउंडेशन तथा श्री विश्वशांति जनकल्याण ट्रस्ट के संस्थापक, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी, गांधीवादी तथा श्री विश्वशांति टेकड़ीवाल परिवार के मुखिया ब्रह्मलीन विश्वनाथ टेकड़ीवाल की अष्टम पुण्यतिथि पर उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि दी गयी।

श्री टेकड़ीवाल एक महान विभूति थे। वे प्राकृतिक चिकित्सा के पक्षधर थे, और अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करते थे। अपने इन उपरोक्त दो ट्रस्टों द्वारा निःशुल्क वितरित धार्मिक साहित्य विश्वभर में लगभग दो लाख लोग रोजाना पढ़ते हैं। साहित्य को उनके समाजसेवी पुत्र डॉ0 बी0एल0 टेकड़ीवाल तैयार करते हैं। विश्वनाथ जी के पिता द्वारका प्रसाद जी भी एक मानवतावादी व्यक्ति थे। उनके संस्कार इन्होंने ग्रहण किये और अपनी संतानों में भी डाले। विश्वनाथ जी एवं शांतिदेवी को चार पुत्र एवं चार पुत्रियां हुई। सबसे बड़ी बेटी सुशीला गोविन्द ताजपुरिया, पुत्र शिवहरि, नवल किशोर, बनवारीलाल एवं पुत्री सरोज अनिल अग्रवाल आदि के भरेपूरे परिवार उनके सिद्धांतों को अपनाकर अपना जीवन सार्थक कर रहे हैं।

वैदिक विद्वान आश्रय केन्द्र प्रारम्भ

राजेन्द्र पथिक
अलीगढ़।

आर्यसमाज, महर्षि मार्ग (अचल मार्ग) अलीगढ़ में वैदिक विद्वान आश्रय केन्द्र प्रारम्भ कर, भारतवर्ष में आर्यसमाज के इतिहास में एक नये अध्ययन का सूत्रपात किया गया है।

नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 11 अप्रैल को आयोजित समारोह में उपस्थित भारी आर्य जनसमूह के मध्य आर्यसमाज के मंत्री राजेन्द्र पथिक द्वारा निराश्रित वेद विद्वानों, प्रचारकों एवं भजनोपदेशकों को, जो वयोवृद्ध हों, उनके आवास एवं भोजन की स्थायी व्यवस्था अलीगढ़ आर्यसमाज द्वारा किए जाने की घोषणा की गयी, जिसका सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया गया। साथ ही वयोवृद्ध विद्वानों को आमंत्रित किया गया।

इस अवसर पर संस्था प्रधान आचार्य भीमसेन आर्य, कोषाध्यक्ष महेन्द्रपाल वार्ष्णेय, अशोक भारद्वाज, विपिन बिहारी गुप्ता, सत्येन्द्र प्रकाश गुप्त, आर्य महेश चन्द्र अग्रवाल, रणवीर सिंह, सरोज गुप्ता आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

स्वामी सेवानन्द ओ३माश्रित का स्मृति उत्सव ३ को

मिलक रामपुर। स्वामी सेवानन्द ओ३माश्रित का स्मृति उत्सव गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी 3 अगस्त को समारोहपूर्वक मनाया जायेगा। प्रातः 9 बजे गुरुकुल रठौंडा से विशाल शोभायात्रा प्रारम्भ होकर नगरिया खाता, रैरा कलां होते हुए आर्य विद्यालय इंटर कालेज, मिलक में सभा के रूप में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर क्षेत्रभर से आर्यजन व अतिथिगण पधारेंगे।

संस्कृत समस्या समाधान गोष्ठी सम्पन्न

नई दिल्ली। संस्कृत शोध छात्र परिषद् (डीयू. जेएनयू. एल. बी. एस. आर. एस. वी.), संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली व संस्कृत संरक्षण मंच के संयुक्त तत्वावधान में गुरुकुल की छात्रा कुमारी वन्दना चौहान का भारतीय प्रशासनिक सेवा में आठवां स्थान प्राप्त करने पर अभिनन्दन समारोह व संस्कृत समस्या समाधान गोष्ठी का आयोजन 6 जून को एम. पी. क्लब, नोर्थ एवेन्यू, नई दिल्ली में किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, कुलाधिपति, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली ने, व.मुख्यातिथि ओमप्रकाश यादव, सांसद व विशिष्ट अतिथि गुप्तेश्वर पाण्डेय, आईपीएस व कुमारी वन्दना चौहान, आइएएस रहे।

सावरकर जयन्ती पर कवि-गोष्ठी

अमरोहा। खत्री धर्मशाला में स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर की जयन्ती के उपलक्ष्य में काव्यगोष्ठी का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर कवि प्रकाश प्रजापति, पं. चन्द्रपाल यात्री, भुवनेश कुमार भुवन, शशि त्यागी, विमल किशोर वन्देमातरम, चमनलाल रवि आदि ने सहभागिता की।

चमनलाल रवि ने अध्यक्षता की। समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. अशोक कुमार आर्य रहे। मुख्य वक्ता डॉ. जयपाल सिंह 'व्यस्त' ने वीर सावरकर को महान राष्ट्रवादी महापुरुष की संज्ञा दी। कार्यक्रम में हरिश्चन्द्र आर्य, गिरीश त्यागी आदि ने भी सावरकर के जीवन पर प्रकाश डालकर सभा को सम्बोधित किया।

चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

डॉ० अनिल आर्य
नोएडा।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान व एमिटी इन्टरनेशनल के महानिदेशक डॉ. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में विशाल युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर का भव्य आयोजन 8 से 16 जून तक ऐमिटी विश्वविद्यालय, सै.-125, नोएडा में सोल्लास सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए डॉ. ज्येन्द्र आचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार, अजेन्द्र शास्त्री व आचार्य भानुप्रकाश शास्त्री के प्रवचन व भजनोपदेश हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. अमिता चौहान ने की। कार्यक्रम में भारी संख्या में शिवरात्रियों ने सहभागिता की।

धूमधाम से मना ३३वां वार्षिकोत्सव

जयसिंह वर्मा
नई दिल्ली।

आर्यसमाज, सागरपुर का 33वां वार्षिकोत्सव अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। त्रिदिवसीय इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य रामसुफल शास्त्री (हांसी) हिसार, रामनिवास 'गुणग्राहक' व प्रसिद्ध भजनोपदेशक सत्यपाल 'सरल' देहरादून से पधारे। कार्यक्रम में यज्ञ, भजन, उपदेश तथा सायंकाल की सभा में भजन व उपदेश हुए।

कार्यक्रम में स्थानीय आर्यसमाजों के पदाधिकारी, गणमान्य जनप्रतिनिधि, विनय मिश्र, महासचिव युवा कांग्रेस दिल्ली, पवन मिश्रा अध्यक्ष मारवाड़ी सेवा समाज, विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वीरेंद्र सरदाना कार्यकारी प्रधान वेदप्रचार मण्डल (प0) दिल्ली, एम0के0 मदान उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महावीर सिंह, सचिव दिल्ली कांग्रेस कमेटी, सुरेश यादव, प्रसिद्ध दानवीर व समाजसेवी आदि ने उपस्थिति होकर आर्य समाज के उत्सव की शोभा बढ़ाई। पवन मिश्रा अध्यक्ष मारवाड़ी सेवा समाज द्वारा मन्दिर में पेयजल व्यवस्था हेतु एक वाटरकूलर भेंट कराया। कार्यक्रम के समापन पर भव्य ऋषिभोज का आयोजन किया गया।

१५ वर्ष बाद वेदप्रचार

तृषपाल विमल
सिनौली।

आर्यसमाज सिनौली (बागपत) में 15 वर्ष बाद आर्य भजनोपदेशक तृषपाल विमल के अथक प्रयास से तीनदिवसीय कार्यक्रम 16 से 18 अप्रैल तक मनाया गया, जिसमें प्रातःकालीन यज्ञ स्वामी सत्यानन्द (आसनसोल, बंगाल) के ब्रह्मत्व में तीनों दिन किया गया। यज्ञ के उपरांत भजन व उपदेश, तथा रात्रि में पं0 घनश्याम प्रेमी तथा तृषपाल 'विमल' ने इतिहास के माध्यम से जनता में अपने पूर्वजों के किस्से, उनकी वीरता की कहानियां सुनाकर सभी को मुग्ध किया।

इस अवसर पर नवनिर्वाचित प्रधान विनोद कुमार, मंत्री- विपिन कुमार तथा कोषाध्यक्ष- आवेश कुमार व संरक्षक मा0 अनंगपाल आर्य का विशेष सहयोग रहा।

कुर्डी व ककौर में वार्षिकोत्सव सम्पन्न

तृषपाल विमल
बागपत

आर्यसमाज कुर्डी (बागपत) का सप्तम वार्षिकोत्सव 20 से 22 अप्रैल तक मनाया गया, जिसमें गाजियाबाद से डॉ0 सविता आर्या के ब्रह्मत्व में तीनों दिनों का यज्ञ सम्पन्न हुआ। मन्त्रपाठ गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा किया गया, जिसमें महात्मा रामपाल भीष्म, डॉ0 भोपाल सिंह के उपदेश तथा सुरेन्द्र सिंह, पं0 नरेश 'निर्मल', तृषपाल 'विमल' के मधुर भजन व उपदेश हुए। उत्सव में विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक वीरप्पन राठी, संजीव चेयरमैन, रामकुमार खोखर रहे। आर्य जनता ने भारी संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। उधर ककौर में भी 8 से 10 अप्रैल तक प्रातःकालीन यज्ञ आचार्य सोमदेव (जयपुर) के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में डॉ0 भोपाल सिंह के सारगर्भित उपदेश हुए, तथा भजनोपदेशक तृषपाल विमल, सहदेव बेधड़क, पुष्पा शास्त्री ने अनेक विषयों पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का उद्घाटन पूर्व केन्द्रीय मंत्री सोमपाल शास्त्री ने किया।

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

आर्यजनों को विदित होवे कि हमारी वैदिक भजन मण्डली वेद सप्ताहों, बोध सप्ताहों तथा उत्सवों पर प्रचार हेतु सदैव उद्यत है। कृपया हमें कम से कम २ माह पूर्व सूचित करें। हम सेवार्थ तत्पर रहेंगे।

पं. सतीश 'सुमन'
और
पं. सुभाष 'राही'

आर्यकुटी हाऊस नं0 288, रामपुरी, रुड़की रोड,
मुजफ्फरनगर (उ0प्र0) पिन- 251001
मोबाईल नं0 – 09897302352,
09760895671

www.thearyasamaj.org

पाक हिन्दुओं ने लगाई विश्व मानवाधिकार आयोग से गुहार

विनोद बंसल
दिल्ली।

संयुक्त राष्ट्रसंघ के मानवाधिकार आयोग को पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ हो रहे अत्याचारों की दासता जब सुनाई जा रही थी, तब मानवता शर्मसार थी। राजधानी दिल्ली के लोधी रोड स्थित संयुक्त राष्ट्रसंघ के कार्यालय के बाहर पाकिस्तान से आए हिन्दुओं ने जमकर प्रदर्शन किया तथा संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव के नाम एक ज्ञापन भी सौंपा। उन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघ से मांग की, कि इस बावत तुरंत कार्यवाही कर, हिन्दुओं का उत्पीड़न रोका जाए, तथा भारत आए हिन्दुओं को सभी प्रकार की नागरिक सुविधाएं दिलाई जाएं। पाक हिन्दू जत्थे के प्रमुख धरमवीर बागड़ी ने रुआंसू स्वर में संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि पाकिस्तान रूपी नरक में घुट-घुट कर प्रतिपल जीने से तो अच्छा है, हमें भारत में ही मार दो, कम से कम अंतिम संस्कार तो हिन्दू रीति-रिवाज से हो सकेगा।

आर्ष कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद में यज्ञ करतीं ब्रह्मचारिणियां- केसरी।

अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन संपन्न

सुमन कुमार वैदिक
मुम्बई।

दिल्ली संस्कृत अकादमी और वैदिक मिशन (मुम्बई) के संयुक्त तत्वावधान में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संस्कृत सम्मेलन 22 से 24 मार्च तक सान्ताक्रुज आर्यसमाज में मनाया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण की उपस्थिति में किया गया, जिसमें सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश विकास श्रीधर सिरपुरकर एवं डॉ0 मुकुन्दकाम शर्मा, प्रो0 महावीर (कुलपति- उत्तरखण्ड वि0वि0) प्रो0 शशि प्रभाकर सहित गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। तीन दिनों में 80 प्रतिभागियों ने अपने खोजपूर्ण प्रबन्ध पढ़े, जिसमें डॉ0 पियंवदा वेदभारती (आचार्या आर्ष गुरुकुल विद्यापीठ, नजीबाबाद), डॉ0 अन्नपूर्णा (आचार्या- द्रोणस्थली, देहरादून), वेद प्रकाश श्रोत्रिय, महावीर मीमांसक, सूर्यदेव, कल्पना शास्त्री सुशीला आर्या, मनीषा शास्त्री (गुरुकुल नजीबाबाद) सहित 80 प्रतिभाषियों ने भाग लिया।

वेदों में है त्रैतवाद : राजू वैज्ञानिक

बाबूराम आर्य
दिल्ली।

आर्यसमाज बाजार सीताराम, दिल्ली का 93वां वार्षिकोत्सव 15 से 21 अप्रैल तक समारोहपूर्वक मनाया गया, जिसमें यजुर्वेदीय वृहद् यज्ञ का आयोजन आचार्य राजू वैज्ञानिक के ब्रह्मत्व में, तथा गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ किया। नारायण सिंह शास्त्री द्वारा प्रवचन से पूर्व मधुर भजनों की प्रस्तुति की गयी। प्रथम दिवसीय प्रवचन में आचार्य राजू वैज्ञानिक ने त्रेतवाद के सिद्धांत की जानकारी देते हुए बताया कि ईश्वर, जीव और प्रकृति- ये तीनों पृथक-पृथक सत्ताएं हैं। इनका विनाश कभी नहीं होता। ईश्वर एक है, वह सर्वव्यापक है। जीवों की संख्या असंख्य है, प्रकृति जड़ है।

अन्य दिनों प्रवचन के विषय थे- योग के वास्तविक स्वरूप की व्याख्या, गृहस्थ जीवन को किस प्रकार सुखी बनाएं। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम, वेदों से राष्ट्ररक्षा।

20 अप्रैल को स्त्री आर्यसमाज का 68वां वार्षिकोत्सव शकुन्तला आर्या (पूर्व महापौर, दिल्ली) की अध्यक्षता में मनाया गया, जिसमें डॉ0 सुवीरा गुप्ता, आचार्य खुशीराम एवं यज्ञानन्द ने व्यक्त किये। कार्यक्रम समापन में सत्यपाल सिंह शास्त्री का मुख्य उद्बोधन रहा। इसके पश्चात् ऋषि लंगर के माध्यम से प्रीतिभोज दिया गया, तथा मेधावी छात्र-छात्राओं को गत परीक्षा में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये गये। इससे पूर्व 16 अप्रैल को माता द्वारका देवी एवं लाला देवराज गुप्ता स्मृति अन्तर्विद्यालय भाषण एवं गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

आर्यसमाज सीताराम की स्थापना १९१९ में हुई। प्रतिदिन दैनिक यज्ञ एवं सत्संग होता है। आर्य कुमार सभा का सत्संग प्रत्येक रविवार को होता है। स्त्री आर्यसमाज का सत्संग प्रत्येक शुक्रवार को होता है। आर्य उपदेशक, संन्यासी, आर्यों के निवास व भोजन की व्यवस्था, निर्धन छात्रों के लिए पुस्तक, वर्दी की व्यवस्था समाज से आचार्य खुशीराम जी, वेद प्रचार अधिष्ठाता की सेवा समाज को है।

मनुष्य जैसा पकाता है, वैसा ही खाता है : प्रियंवदा

जन्मदिवस मनाएं, मृत्युदिवस नहीं : वैदिक

नम्रता आर्या
नजीबाबाद।

आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद में डॉ0 प्रभात शोभा एवं जगदीश प्रकाश के सुपुत्र असीम प्रकाश की स्मृति में 6 मई को गुरुकुल की यज्ञशाला में यज्ञ डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती के ब्रह्मत्व में किया गया, जिसमें यजुर्वेद के 36वें तथा 40वें अध्याय के वेदमंत्रों से आहुतियां दी गयीं। यज्ञ के पश्चात् अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि सुख-दुख, हानि-लाभ को समझकर कर्म करें। वेद का सिद्धांत है कि मनुष्य जैसा पकाता है, वैसा ही खाता है। वेद की विश्व को महान देन कर्मफल सिद्धांत है। मनुष्य जिन कर्मों को करके दुखों से तरे, उसका नाम तीर्थ है। नदियों वाले तीर्थ तारने वाले नहीं, डुबाकर मारने वाले होते हैं।

असीम प्रकाश ट्रस्ट द्वारा गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों को जहां छात्रवृत्ति दी जाती है, वहीं उनकी स्मृति में यज्ञ तथा ब्रह्मचारिणियों को भोजन कराया जाता है। उनके परिवार के लिए गुरुकुल ही तीर्थ है। वेद की विदुषी ने कहा कि उन्नत वही होगा, जो नम्र बनकर कुछ सीखेगा। अभिमानी कभी ऊपर नहीं उठ सकता। आज का मानव कह रहा है कि राम-राम किया, राधा कृष्ण किया, पाप समाप्त। मानव जो कर्म करता है, भोगना आवश्यक है। शांति के लिए मानव को स्वच्छ आहार, व्यवहार कर, पापों से बचने का प्रयास करना चाहिए।

इस अवसर पर आर्यावर्त केसरी के सुमन कुमार वैदिक ने कहा, मृत्यु क्या है, जिसे जीतने की सभी की इच्छा रहती है? साधारण लोग आत्मा के शरीर त्यागने को मृत्यु कहते हैं। वास्तव में मृत्यु का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। शरीर से निकली आत्मा नष्ट नहीं होती, और शरीर की भी मृत्यु नहीं होती। वह प्रभु का एक चक्र है। पदार्थों का संयोग-वियोग होता रहता है। परन्तु कोई पदार्थ नष्ट नहीं होता। विच्छेद होने पर शोक होता है। जन्म के समय मन और प्राण दोनों का मिलान हुआ। जब दोनों के पृथक होने का समय आता है, तो जो जगत इसने बनाया था, वे सम्बन्धित जन व्याकुल होने लगते हैं। किंतु अन्तरात्मा किसी काल में व्याकुल नहीं होता। यह ब्रह्म ही मृत्यु का मृत्यु है। इसलिए ब्रह्मचारी को मृत्यु का भय नहीं होता। जो ब्रह्म को अपने में समाहित कर लेता है, उसकी मृत्यु नहीं होती। अज्ञान में मृत्यु का भय रहता है। पतन को मृत्यु कहते हैं। हमारे यहां मृत्यु दिवस मनाने की परम्परा नहीं थी। भगवान राम, शिव, हनुमान, कृष्ण आदि महापुरुषों के जन्मदिन सब मनाते आए हैं, मृत्युदिवस नहीं। मृत्युदिवस मनाने की परम्परा पुराणों के पश्चात् आयी। जिस प्रकार मकान बनने पर सभी उत्सव मनाते हैं, किंतु उसे नष्ट होने के दिन को कौन याद रखना चाहता है। इसी प्रकार जन्म दिवस मनाना चाहिए, मृत्युदिवस नहीं।

'मानव धर्मशास्त्र का सार' ग्रन्थ का विमोचन

सुमन कुमार वैदिक
सोनीपत।

केन्द्रीय आर्य समाज, बड़ा बाजार, सोनीपत 19 से 21 अप्रैल तक आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़े भव्य रूप में आयोजित किया गया। इस अवसर पर पं0 रामचन्द्र के ब्रह्मत्व में यज्ञ एवं प्रवचन सम्पन्न हुआ। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक विजयानन्द ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की। इस अवसर पर आर्यसमाज के चलते-फिरते विश्वकोष महारथी पं0 शांतिप्रकाश शास्त्री, अमर स्वामी सर्वानन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, पं0 रुचिराम आर्य, वेदानन्द तीर्थ आदि विद्वानों के जीवन के रोमांचक, प्रेरणादायी, उनके प्रसंगों का वर्णन के साथ अपने आध्यात्मिक प्रवचनों से आर्य जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर पं0 रामचन्द्र आर्य ने स्वामी दयानन्द के सभी ग्रन्थों के लेखन कार्य करने वाले पं0 भीमसेन के विषय में बताया, जिन्होंने स्वामी जी के जीवनकाल में कार्य किया। देहावसान के 17 वर्ष पर्यन्त वैदिक मनुस्मृति, ऋग्वेदभाष्य भूमिका पर किए गये आक्षेपों का उत्तर दिया। ब्रह्मसूक्त आदि वैदिक ग्रन्थों का भाष्य प्रस्तुत किया। यदि वह आर्यसमाज को छोड़कर सतनात धर्म के अनुयायी न होते, तो आर्य विद्वानों में शीर्ष पर इनका स्थान होता।

इस शुभ अवसर पर आर्यसमाज नगर सोनीपत की शताब्दी स्मृतिग्रन्थमाला के द्वितीय पुष्प के रूप में 118 वर्ष पुराने 'मानव धर्म शास्त्र का सार' का लोकार्पण भी किया गया। पं. रामचन्द्र ने इस अवसर पर बताया कि आजकल महर्षि मनु पर मनुवाद कहकर किए जा रहे आक्रमणों का यह मुंहतोड़ उत्तर प्रस्तुत करता है। इसका संपादन आर्यजगत के उद्भट विद्वान पाणिनी महाविद्यालय, तल्ली खुर्द (करनाल) के यशस्वी आचार्य प्रदीप कुमार शास्त्री ने अत्यंत परिश्रम पूर्वक किया है। अन्त में सभी आगन्तुकों को धन्यवाद दिया।

www.thearyasamaj.org

नेहा को स्वर्ण पदक

सुमन कुमार वैदिक
हरिद्वार।

उत्तराखण्ड संस्कृत वि.वि. के चौथे दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि राज्यपाल अजीज कुरैशी ने आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणी नेहा वाजपेयी शास्त्री को शास्त्री परीक्षा में पूरे विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर स्वर्ण पदक प्रदान किया। राज्यपाल ने अपने दीक्षांत भाषण के दौरान कहा कि संस्कृत की महानता दुनिया में सूर्य के समान चमक रही है। इसके संरक्षण की जिम्मेदारी सभी को निभानी चाहिए।

इस अवसर पर कुलपति डॉ. महावीर अग्रवाल ने डिग्री लेने वाले छात्र-छात्राओं से कहा कि वे अपनी योग्यता से विश्व में सुगन्ध फैलाने का कार्य भी करें। दीक्षांत समारोह के दौरान 2603 छात्र-छात्राओं को उपाधि प्रदान की गयी।

स्वामी दयानन्द विदेह द्वारा वेदप्रचार की धूम

बनारस (करुणानिधि)। प्रतिवर्ष की भांति महिला यज्ञ सत्संग मण्डल के माध्यम से स्वामी जी के द्वारा वेदयज्ञ योग के बारे में सरल ढंग से सभी श्रोताओं को प्रेरणा देते हुए बताया कि जब शरीर, विद्या और आहार विद्या का ज्ञान परिपूर्ण नहीं होता, तब तक साधक और साधिकाएं यज्ञ और योग में दक्षता प्राप्त नहीं कर सकते। उन्होंने सभी को अष्टभुजा दुर्गा को प्रतीक के रूप में अष्टांग योग की ओर अग्रसर होने को प्रबल चेतना बताया। देवी जागरण पर स्वामी जी ने समझाया कि आयुर्वेद तथा प्रकृति के अनुसार रात्रि जागरण मना है। अत: दिव्य आतमी की शक्तियों को जगाने के लिए योगयुक्त जीवन पद्धति को अपनाना होगा। अंत में हास्य प्राणायाम से सभी गदगद हुए। स्वर्गीय माता वेदकुमारी की प्रेरणा से यह सत्संग यज्ञ निर्विघ्न चल रहा है। उन्हें सभी सत्संगियों ने स्मरण किया।

भगतसिंह के बलिदान से युवा प्रेरणा लें

राजेन्द्र कुमार आर्य
कोटा।

आर्यससमाज भीमगंज मण्डी, कोटा जं. के सभागार में बोलते हुए देश में हाड़ौती की प्रसिद्ध गायिका मृदुला सक्सेना ने कहा कि भगतसिंह के पावन बलिदान से युवा प्रेरणा लें, भगतसिंह, चन्द्रशेखर, रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु ने 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाते-गाते फांसी के फन्दे को चूम लिया था। राजेन्द्र आर्य ने बताया कि आज फैले भ्रष्टाचार, काला धन रूपी बुराइयों को उखाड़ फेंकना होगा।

हाड़ौती के वरिष्ठ कवि इन्द्रविहारी सक्सेना ने वीररस की कविता गाकर श्रोताओं को रोमांचित कर दिया। सूरजमल त्यागी ने भी क्रान्तिकारी विचार दिये। शांतिपाठ व जयघोष से समापन हुआ।

श्रद्धांजलि

विद्यासागर नागर दिवंगत

चन्दौसी। रेलवे विभाग से सेवानिवृत्त सुहृदय, मृदुभाषी विद्यासागर नागर (91) का हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन के समाचार से नागर भवन पर श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लग गया। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके एक पुत्र डॉ0 रमाकान्त नागर, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति के निजी सचिव है, तथा पुत्रवधू डॉ0 बीनू नागर, एन0के0बी0एम0जी0 पी0जी0 कॉलेज, चन्दौसी में गृहविज्ञान की एसोसिएट प्रोफेसर हैं। नगर के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व अन्य अनेक संगठनों ने उनके निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

मगनलाल को पत्नीशोक

जसपुर। आर्यसमाज जसपुर (ऊधमसिंह नगर) के सदस्य, आर्ष कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद के सदस्य, सरस्वती विद्या मन्दिर, जसपुर के प्रबन्धक के सम्मानित सदस्य मगनपाल की धर्मपत्नी श्रीमती जावित्री देवी (62 वर्ष) की गत 22 अप्रैल का मोटर साइकिल दुर्घटना में देहान्त हो गया। वे अपने पीछे तीन पुत्र व एक पुत्री छोड़ गयी हैं। शांति यज्ञ 25 अप्रैल को वैदिक विधान से किया गया। आर्यावर्त केसरी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में आयोजित आठ कुण्डीय यज्ञ का सुन्दर दृश्य- केसरी।

५१ बेटियों ने किया आठकुण्डीय यज्ञ

सुभाष आर्य
झज्जर।

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र, झज्जर में एक ही मौहल्ले भट्टी गेट की लगभग 51 बेटियों ने श्रीराम नवमी पर आठकुण्डीय यज्ञ समारोह में यज्ञ समिति झज्जर के तत्वावधान में बढ़चढ़ कर भाग लिया, और कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में हरियाणवी बोली में मार्मिक कविता "आलैण दे री मां आलैण दे, मने दुनिया में आलैण दे" सुनाकर श्रोताओं को द्रवित कर दिया। महाशय रतिराम आर्य, रामपत, चमनलाल व महावीर वारन्ट अफसर की तरफ से ऋषिलंगर का आयोजन किया गया। यज्ञब्रह्मा सोनिया आर्या ने कहा कि जिस प्रकार नदियों का पानी किनारों पर पड़ी गन्दगी को बहाकर ले जाता है, उसी प्रकार यज्ञ की अग्नि शरीर व मकान में व्याप्त रोगों के कीटाणुओं को नष्ट कर देती है।

मुख्यातिथि वयोवृद्ध केहरी सिंह ने कहा कि हमें मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी की तरह मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। भारत स्वाभिमान झज्जर के कर्मठ कार्यकर्ता प्रवीण आर्य ने कहा कि यज्ञ और व्यायाम को दैनिक दिनचर्या में शामिल किए बगैर जीवन सुखी नहीं हो सकता।

कार्यक्रम के अध्यक्ष पं0 रमेशचन्द्र (प्रधान, वैदिक सत्संग मण्डल, झज्जर) ने कहा कि परिवार तथा समाज में नारी को सम्मान दिए बगैर दुर्गापूजा सार्थक नहीं है। ब्र0 इन्द्रजीत, नवीन आर्य, सुनील, सुमेधा, चेष्टा, अंकिता आदि ने भी नैतिकता की बातें कहीं।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय योगासन प्रतियोगिता सम्पन्न

प्रवीण आर्य
गाजियाबाद।

समयोग फाउण्डेशन के तत्वावधान में डॉ0 अशोक कुमार चौहान (फाउण्डर प्रेसिडेंट ऐमिटी शिक्षण संस्थान, दिल्ली-नोएडा) के सानिध्य में ध्यानगुरु साक्षी रामकृपाल के आशीर्वाद से उत्तर प्रदेश प्रांतीय योगासन प्रतियोगिता 2013 का आयोजन 21 अप्रैल को आर्यसमाज मंदिर, राजनगर में किया गया, जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के उत्तरप्रदेश के विभिन्न स्कूल, कालेज व गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

समयोग फाउण्डेशन के संस्थापक अध्यक्ष दानवीर विद्यालंकार ने बताया कि प्रतियोगिता का उद्घाटन राजकुमार त्यागी, संरक्षक, संस्थापक एवं पूर्व अध्यक्ष अखिल भारतीय योग संस्थान गाजियाबाद ने किया। तथा साथ ही आह्वान किया कि स्कूल, कालेज आदि शिक्षण संस्थाओं की योग प्रतियोगिताएं कराके बच्चों में बचपन से ही योग-ध्यान के संस्कार रोपित करके उन्हें शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ बनाना है, ताकि युवा वर्ग मानवता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन सुचारु रूप से करके राष्ट्र उन्नति में सहयोगी बने। मुख्य अतिथि योगाचार्य मायाप्रकाश त्यागी व अध्यक्ष स्वामी वेदानन्द सरस्वती (अध्यक्ष, वैदिक साधना आश्रम ट्रस्ट) रहे। ध्यान गुरु साक्षी रामकृपाल ने ध्यान की गहराइयों के विषय में उद्बोधन दिया।

इस अवसर पर डॉ0 अनिल आर्य, श्रद्धानन्द शर्मा, प्रवीण आर्य, चौ0 धनवीर सिंह, चौ0 सत्यवीर, आनन्द चौहान, सतेन्द्र सिंह यादव, अग्निदेव शास्त्री आदि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

दयानन्द विदेह के मार्गदर्शन में हुआ यज्ञ

अजय प्रसाद वर्मा
बरकाकाना (झारखण्ड)।

स्वामी दयानन्द विदेह, संस्थापक ओ३म् साधना मंडल, नई दिल्ली, करनाल के मार्गदर्शन में यज्ञ तथा सत्संग सम्पन्न हुआ।

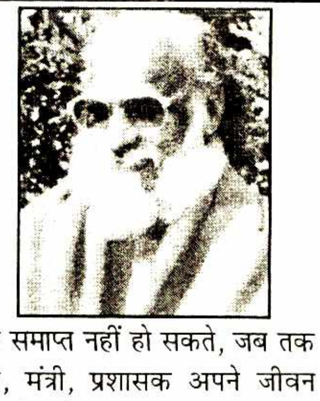

स्वामी जी ने देवत्व के विकास के लिए ललकारते हुए वैदिक मंत्रों से प्रेरणा देते हुए उत्साहजनक उपदेश अमृत दिया। उन्होंने कहा कि योग साधना के द्वारा आत्मा की दिव्य शक्तियों को उभारा जा सकता है। भ्रष्टाचार आदि अनैतिक कर्म तब तक समाप्त नहीं हो सकते, जब तक नेता, मंत्री, प्रशासक अपने जीवन को योग के द्वारा दिव्य नहीं बनाते।

आर्यसमाज लारी के वार्षिकोत्सव में स्वामी जी ने सभी को इन्हीं विचारों से प्रबल उपदेश, प्रेरणा, चेतना प्रदान की। वार्षिकोत्सव में पं. प्रद्युम्न, रांची के द्वारा सामदेव पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य आर्य नरेश (हिमाचल) ने जनता को हुंकारते हुए स्पष्ट शब्दों में भ्रष्टाचार मिटाने के लिए सत्ता परिवर्तन तथा व्यवस्था परिवर्तन के लिए विशेष आग्रह ओजस्वी वाणी में किया। पं. कृष्णदेव कन्या गुरुकुल, हजारी बाग ने श्राद्ध तर्पण के बारे में मनोरंजक ढंग से वैदिक श्राद्ध तर्पण की विधि बतायी। कविता (दिल्ली) ने भजनों के माध्यम से जनता को भक्तिमय वातावरण से गदगद किया।

www.thearyasamaj.org

वैदिक क्रान्तिकुंज में नित्य होता है ब्रह्मयज्ञ

दयाराम वेदपथी
बदायूं।

निरक्षर एवं प्रथम, द्वितीय कक्षाओं के बालक-बालिकाएं भी वेदमंत्रों से ब्रह्मयज्ञ (संध्या) कर सकते हैं। यह सिद्ध कर दिखाया है वैदिक क्रान्तिकुंज में रहने वाले बच्चों ने।

दयाराम वेदपथी की सुपुत्री सुभद्रा कुमारी वेदपथी के सत्प्रयासों से कुछ बच्चे नित्य संध्या करने बैठते हैं, जिनमें कई बच्चों को संध्या के मंत्र कण्ठस्थ हो रहे हैं। सुभद्रा एवं गोपालकृष्ण वेदपथी ने तो अल्पायु में ही संध्या के पूरे मंत्र कण्ठस्थ कर लिए थे, तभी से ये दोनों अपनी माता तारावती के साथ बालसमूह को लेकर नित्य संध्या कर रहे हैं और ब्रह्मयज्ञकर्ताओं की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है।

ये बच्चे विश्व को यह संदेश देना चाहते हैं कि संसार के सभी आबाल-वृद्ध, नर-नारी नित्य संध्या कर, अपने जीवन को पवित्र बनावें, सारा संसार दुराचार व भ्रष्टाचार से मुक्त होकर आर्य (श्रेष्ठ) बन सके और आर्यावर्त विश्व का गुरु बने।

भारतीय जनसेवा संस्थान ने खोले पांच और नये सेवा केन्द्र

दिल्ली। भारतीय जनसेवा संस्थान (पंजी0) दिल्ली द्वारा राष्ट्रहित में पांच नये सेवाकेन्द्रों का उद्घाटन 19 मई को 31, एक्स्ट्रा ब्लॉक त्रिलोकपुरी में मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक सुनील वैद्य के द्वारा किया गया। अध्यक्षता महेश नागर ने की। मुख्य वक्ता विश्व हिन्दू परिषद् के केन्द्रीय मंत्री मा. जुगलकिशोर ने कहा कि समाज के सभ वर्गों को विकसित केवल सरकार के द्वारा नहीं किया जा सकता। अतः सारे समाज को सेवाकार्यों में सहयोग देना चाहिए।

इस अवसर पर मुख्य यजमान प्रियव्रत पाण्डेय, प्रसिद्ध समाजसेवी बलदेव महाजन, महर्षि बाल्मीकि आश्रम के संतराम पारचा तथा अनेक गणमान्य सज्जन उपस्थित थे। जनता भी पर्याप्त संख्या में उपस्थित थी। कार्यक्रम का संचालन गुरदीन प्रसाद ने किया बाल संस्कार केन्द्र व सिलाई केन्द्र के बच्चों एवं बहनों द्वारा भी सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

सार्वभौमिक, वैज्ञानिक व असाम्प्रदायिक है यज्ञ

सुमनकुमार 'वैदिक'
ग्रेटर नोएडा।

आर्यसमाज सूरजपुर, ग्रेटर नोएडा का 51वां वार्षिकोत्सव 22 से 24 मार्च तक आर्यसमाज के प्रांगण में बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर अथर्ववेद के मंत्रों से यज्ञ किया गया। डॉ. पवित्रा विद्यालंकार ने अपने उपदेश में कहा कि स्वामी दयानन्द ईश्वर की बनायी मूर्ति 'मनुष्य' की पूजा करने वाले थे। वेद त्रैतवाद की घोषणा करता है।

मुजफ्फरनगर से आए विद्वान यज्ञमुनि ने कहा कि यज्ञ सार्वभौमिक वैज्ञानिक व असांप्रदायिक है। समाज के प्रधान महेन्द्र कुमार आर्य ने कहा कि रोगनाशक औषधियों से यज्ञ द्वारा रोग निवारण का उल्लेख चरकसंहिता आदि ग्रन्थों में भी मिलता है। आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक नरेश निर्मल एवं कुलदीप आर्य ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति की।

कार्यकारिणी अध्यक्ष पं0 महेन्द्र कुमार आर्य, उपाध्यक्ष पं0 जयदेव शर्मा, मंत्री पं0 मूलचन्द्र शर्मा आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

ओम साधना मण्डल द्वारा यज्ञ- वेद प्रचार की धूम

प्रतिनिधि
बारो (बरौनी)।

आर्यसमाज के तत्वावधान में ओम साधना मण्डल के संस्थापक स्वामी दयानन्द 'विदेह', नई दिल्ली एवं करनाल के द्वारा शिवजी आर्य के निवास पर पारिवारिक सत्संग सम्पन्न हुआ।

पूर्णिमा यज्ञ के उपरांत स्वामी जी ने बड़े सरल ढंग से पूर्णता की ओर अग्रसर होने के लिए शरीर विद्या और आहार विद्या के द्वारा योगयुक्त जीवन को अनिवार्य बताया।

एक पारिवारिक सत्संग धनेश्वरी देवी के आवास पर यज्ञोपरांत यज्ञ महिमा पर बोलते हुए स्वास्थ्य सुधार के लिए तथा आध्यात्मिकता के विकास के लिए श्रेष्ठतम् कर्म यज्ञ मानव मात्र के लिए परम कर्त्तव्य है। सत्यनारायण कथा के मर्म को समझाते हुए उन्होंने कहा कि यदि मानव सत्यव्रत को धारण कर ले, तो मानव के जीवन से सभी तरह के भ्रष्टाचार नष्ट हो सकते हैं। वास्तव में सभी आश्रमों का सत्य ही व्रत है, सत्य का आचरण ब्रह्म की परम उपासना है।

ज्ञानचक्षुओं से ही संभव है प्रभुदर्शन : प्रियंवदा

वंदना आर्या
दान्दुपुर (मेरठ)।

ग्राम दान्दुपुर में ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी की प्रेरणा से यज्ञों को कराने वाले कई परिवार हैं। वर्ष में एक बार चतुर्वेद पारायण यज्ञ भी ग्रामवासी करते हैं। इसी क्रम में 15 से 17 मई तक शिवकुमार भगत जी के परिवार में वेद विदुषी डॉ0 प्रियंवदा वेदभारती के ब्रह्मत्व में आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियों के वेदपाठ में सामवेद पारायण यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया।

डॉ0 वेदभारती ने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जी के द्वारा पारायण यज्ञों का यहां आयोजन किया जाता था, जिसकी अग्नि शांत नहीं होनी चाहिए, उन्होने सामवेद के मंत्र 'उपहरे गिरीणाम् संगमे च नदीनाम् धिया विप्रो आजा यज्ञ।' की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि वह इन्द्र परमेश्वर कहां नहीं है। वह सर्वव्यापक है। किंतु उसका दर्शन बाह्य आंख से होना संभव नहीं है। ध्यान द्वारा आन्तरिक चक्षु से ही वह साक्षात्कार किये जाने योग्य है। और ध्यान, कोलाहल भरे वातावरण में नहीं, अपितु पर्वतों और नदियों के शांत प्रदेश में सुगम होता है। उन्हीं ध्यानयोग्य प्रदेशों में ध्यान करने वालों को परमेश्वर का साक्षात्कार होता है।

आगे और व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि कौन उसकी पूजा कर सकता है? इसको समझाते हुए उन्होंने कहा कि निराकार, शरीर रहित, आंख से अगोचर परमेश्वर की भी शांत (पर्वतों और नदियों के शांत प्रदेश में) वातावरण में ध्यान करता हुआ मनुष्य ही पूजा कर सकता है। उसकी मूर्ति रचकर उस पर पत्र, पुष्प, जल आदि चढ़ाने वाला उसका वास्तविक पूजक नहीं हो सकता।

व्याख्यान के पश्चात् प्रतिदिन ब्रह्मचारिणियों के सुमधुर व सारगर्भित गीतों तथा भजनों से सारा वातावरण मधुरता के लय में गुंजायमान रहता था।

अंतिम स्वतंत्रता सेनानी पंचतत्व में विलीन

रमेश सिंह एडवोकेट
मुरादाबाद।

जनपद मुरादाबाद में देश की स्वतंत्रता की याद संजोए अंतिम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हरिशंकर गर्ग पंचतत्व में विलीन हो गये। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर शहर एवं आसपास के लोग उनके घर पर पहुंचने लगे।

मोक्षधाम में कमिश्नर, डीआईजी, डीएम, एसपी सिटी, नगर आयुक्त, सीओ, नगर मजिस्ट्रेट, उपजिलाधिकारी सदर, तहसीलदार सदर, आदि ने अपनी ओर से समिधाएं, सामग्री एवं फूलमाला अर्पित कीं। शासन की ओर से उन्हें रायफल सैनिकों द्वारा अन्तिम सलामी दी गयी। अन्तिम संस्कार में अनेक सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक संगठनों के लोग उपस्थित रहे, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम संगठन से लल्लूसिंह, इशरतुल्ला, राकेश कुमार शर्मा, महेन्द्र अग्रवाल, कृष्णा पूर्वी, स. गुरविन्दर सिंह, डॉ. पल्लव अग्रवाल, पूर्व इन्सपेक्टर आरपी गुप्ता, भाजपा नेता विनोद अग्रवाल, गोपाल अंजान, रामजी, कांग्रेस से विनोद गुप्ता, असद मौलाई, सलमान खुर्शीद, आर्यसमाज से ज्ञानेन्द्र गांधी, रमेश सिंह, डॉ. राममुनि, हरस्वरूप सिंह, सपा नेता इरफान, शहर विधायक हाजी यूसुफ अन्सारी, एस.टी. हसन, पादरी पॉल सारस्वत, विजय मदान, अनिल सिक्का, धवल दीक्षित, विहिप के जगदीश सरन अग्रवाल, पीएनबी से चौधरी राजवीर सिंह, प्रेस क्लब के सदस्य के.के. गुप्ता आदि भारी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

सरस कृत पर्यावरण पचीसी का लोकार्पण

कनक लता रस्तौगी
मुरादाबाद।

पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर महाराजा हरिश्चन्द्र महाविद्यालय, लाजपतनगर में बाल कवि 'सरस' द्वारा रचित पुस्तक 'पर्यावरण पचीसी' का लोकार्पण महापौर 'बीना अग्रवाल' द्वारा किया गया। भाजपा के प्रान्तीय अधिकारी रामअधीन सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न इस समारोह में डॉ. डी.पी. रस्तोगी, जगदीश शरण अग्रवाल, एवं राजीव सक्सेना विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। कार्यक्रम का शुभारम्भ नवोदित कवि अंकित कुमार 'अंक' के द्वारा प्रस्तुत की गयी सरस्वती वन्दना से हुआ। जितेन्द्र कुमार जौली और जिया जमीर ने इस अवसर पर पर्यावरण संबन्धी रचनाएं प्रस्तुत कीं। पुस्तक के रचयिता शिव अवतार सरस ने विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों का उल्लेख करते हुए बताया कि पर्यावरण को सुधारे बिना हम प्रदूषण से मुक्त नहीं हो सकते। जल के अभाव के संबन्ध में श्री सरस का कथन था कि जब तक बच्चे 'खुला न छोड़ें हम टोंटी को, पानी बहे नहीं बेकार' जैसा संकल्प नहीं लेंगे, तब तक जल संरक्षण की सारी योजनाएं कल्पना मात्र हैं। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए इस पुस्तक में वृक्षारोपण के संबन्ध में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इस कार्यक्रम में जयनारायण, जगन्नाथ अग्रवाल, राकेश जायसवाल, अतुल जौहरी, रघुराज सिंह निश्चल, डॉ. अजय अनुपम, योगेन्द्र वर्मा व्योम, ओमकार सिंह, रामप्रसाद वशिष्ठ,

उदय अस्त आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संचालन काव्य सौरभ और संयोजन डॉ. जैमिनी ने किया। अन्त में श्री सरस ने सभी के प्रति आभाराभिव्यक्ति की।

आवश्यकता है

महर्षि दयानन्द जन्मभूमि टंकारा में चल रहे महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ऐसे उपाचार्य की आवश्यकता है जो काशिका तथा महाभाष्य एवं निरूक्तादि पढ़ाने में सक्षम हो। योग्यतानुसार वेतन एवं आवास- भोजनादि की सुविधा विद्यालय में दी जायेगी। नीचे लिखे पते पर प्रमाण-पत्र, अनुभव तथा पासपोर्ट साईज़ की फोटो के साथ आवेदन पत्र भेजें।

रामदेव शास्त्री, आचार्य मोबा. : 09913251448 महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, टंकारा, जिला-राजकोट, गुजरात-363659 फोन नं. 02822-287756

आर्यसमाज का चुनाव

पट्टीटोला, रामपुर (उ.प्र.)

प्रधान- राजेन्द्र कुमार आर्य
उपप्रधान- हीरालाल किरण, देवेन्द्र कुमार रस्तोगी
मंत्री- संजय रस्तोगी
उपमंत्री- सत्येन्द्र कुमार गुप्ता व विनय कुमार रस्तोगी
कोषाध्यक्ष- सुभाष चन्द्र रस्तोगी

www.thearyasamaj.org

रोकनी होगी प्रकृति से छेड़छाड़

उत्तराखण्ड की त्रासदी के बाद से पर्यावरण प्रदूषण के खतरों की बहुत चर्चा है। हमें लगता है कि इससे जितना खतरा बाह्य जगत को है, उससे अधिक खतरा अन्तर्जगत को है। अतः हमारा ध्यान इस ओर भी आकर्षित होना चाहिए कि प्रदूषण के प्रभावों से कैसे हम अपने मनोजगत को बचावें। आज के जीवन की विडम्बना यह है कि हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण और प्राकृति पर्यावरण में सामंजस्य नहीं रह गया है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि जीवन में समरसता का अभाव होता चला जा रहा है। प्रकृति के उपयोग अथवा उसकी शक्ति-सम्पदा पर ही आज का मानव जीवन टिका हुआ है। गलती यह होती है कि हम प्रकृति का सदुपयोग न कर, उसका शोषण अथवा दोहन करते हैं। हमें शायद यह नहीं मालूम कि अपनी प्रकृति के साथ अत्याचार करके हम उसके द्वारा अज्ञात रूप से कितने दण्डित हो रहे हैं; तथा जल, वायु, धरती, नदी, तालाब, कुएं, वन, पर्वत, आकाश और जीव-जगत को प्रदूषित कर, एक ओर तो हम अपने बाह्य संसार को दूषित और विषाक्त कर रहे हैं, तो दूसरी ओर अपने आन्तरिक पर्यावरण पर प्रश्नचिन्हों को गहरा करते चले जा रहे हैं।

वनों को काटकर, आकाश को विषैली गैसों से भरकर, नदियों को कचरों से परिपूर्ण कर, धरती में खाद और दवाओं का जहर घोलकर क्या हम अभूतपूर्व क्रूर, हिंसक, आस्थाहीन, स्वार्थी, असामाजिक व नास्तिक नहीं होते जा रहे हैं? ऐसा लगता है कि मानव-सभ्यता के विनाश के असली खतरे का बिन्दु यही प्रदूषण है। प्रदूषण को रोकने अथवा मनोजगत के पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए हमको इसके प्रति सजग रहना होगा? अगर हम अब भी नहीं चेते, तो प्रकृति के भयंकर रौद्र रूप का सामना करने के लिए हमें तैयार रहना होगा। न जाने केदारनाथ त्रासदी की तरह कितनी और त्रासदियों का सामना हमारी आने वाली संततियों को करना पड़ेगा। विकास की गति कहीं विनाश की गति न बन जाए, इसी चिन्तन के साथ अपने अतीत के अनुभवों से सबक लेते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने हेतु प्रयत्नशील रहना होगा।

पुस्तक समीक्षा

सफलता की सीढ़ियाँ

प्रसिद्ध लेखक श्री राम कुमार 'सेवक' की नवीनतम पुस्तक है- 'सफलता की सीढ़ियां को तेरह अध्यायों के अन्तर्गत बाँटा गया है। सफलता की पहली सीढ़ी है- स्पष्ट लक्ष्य। रेलवे स्टेशन की टिकट खिड़की पर पहुँचे व्यक्ति को यदि यही नहीं पता होगा कि उसे जाना कहाँ है तो वह टिकट कहाँ की लेगा? चलने से पहले मंजिल की जानकारी होना अति आवश्यक है। इस अध्याय में लेखक ने ऊँचा लक्ष्य निर्धारित करने की प्रेरणा दी है। दूसरी सीढ़ी है- दृढ़ निश्चय। इसमें लेखक ने महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका यात्रा, भगवान राम, अब्राहम लिंकन आदि अनेक महान व्यक्तियों के उदाहरणों द्वारा इस गुण की अवश्यकता पर प्रकाश डाला है। तीसरी सीढ़ी है- आत्मविश्वास। आत्मविश्वासी व्यक्ति भक्त हनुमान की तरह हर कठिनाई का मुकाबला कर सकता है। इस अध्याय में लेखक ने अपने जीवन की अनेक घटनाओं द्वारा आत्मविश्वास के करिश्मे का बखान किया है। चौथी सीढ़ी है- साहस। इमर्सन की पंक्ति- साहस गया कि मनुष्य की आधी समझदारी उसके साथ गई, से इस सीढ़ी के महत्व का पता चलता है। मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'नमक का दरोगा' को उद्धृत कर साहस की आज के युवाओं के लिए कितनी आवश्यकता है, यह दर्शाया है। पाँचवी सीढ़ी है- प्रतिभा। प्रतिभा अगर उभरकर संसार के सामने न आई तो उसका क्या लाभ? प्रतिभा को कैसे उभारा जाए, कैसे एक क्षेत्र में सफल हो जाने पर प्रतिभा के अन्य क्षेत्रों में भी हाथ आजमाया जा सकता है, लेखक ने यह अपनी चिर-परिचित शैली में स्पष्ट किया है। छटवीं सीढ़ी है- कठिन परिश्रम। डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम के जीवन की घटना के माध्यम से लेखक ने इस गुण की महत्ता पर बल दिया। छोटी-छोटी शिक्षाप्रद कहानियाँ इस तथ्य को ओर स्पष्टता से साबित करती है।

आठवीं सीढ़ी है- मार्गदर्शन। कार्य करने की सही तकनीक तो गुरु से ही मिलती है। गुरु की बात मानकर ही सफलता की राह पर अग्रसर हुआ जाता है। चाहे स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करनी हो या जीवन की परीक्षा, हर स्थान पर गुरु के मार्गदर्शन की जरूरत है। नौवीं सीढ़ी है- अनुशासन। समय की कद्र करते हुए मर्यादापूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी गई है। सही वक्त पर सही कार्य करना, यही अनुशासन है। यहाँ लेखक ने डंडे के बल पर नहीं, बल्कि स्वयं अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति द्वारा अनुशासन को आत्मसात करने पर बल दिया है।

दसवीं सीढ़ी है- धैर्य! हर बात की प्रतिक्रिया देने में जल्दी न करना धैर्यवान होने की निशानी है। दशरथ मांझी, जादव मुपई, मार्टिन लूथर किंग, विंस्टन चर्चिल, शेख सादी आदि का जिक्र करते हुए लेखक ने धैर्य की महत्ता बतायी है।

पुस्तक- सफलता की सीढ़ियाँ
लेखक- रामकुमार 'सेवक'
मूल्य- १००/- (पेपर बेक)
प्रकाशक व वितरक- प्रगतिशील साहित्य, ५/१२०ए, निकट बांध, प्रथम तल, संत निरंकारी कॉलोनी, दिल्ली-९ मो.: ०९८६८७१००७६

समीक्षक- विकास अरोड़ा

जनवाणी

सुनिश्चित हो केन्द्र सरकार की जवाबदेही

महोदय,

हमारे देश में स्वतंत्रता से लेकर अभी तक बहुत-सी ऐसी घटनाएं हैं, जिनकी वास्तविकता जनता के सामने नहीं आयीं। चाहे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का गायब होना हो, या पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की ताशकन्द में रहस्यमय ढंग से मृत्यु होना हो, ऐसी सच्चाई जनता के सामने आनी आवश्यक हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, लेकिन सरकार पारदर्शी नहीं है। बेहतर हो कि सरकार यह महसूस करे कि कानून एवं व्यवस्था की स्थिति अच्छी होनी चाहिए और आम जनता को खुद को सुरक्षित महसूस करना चाहिए। अगर सरकार वास्तव में कानून व्सवस्था के प्रति गंभीर है, तो उन तत्वों को कड़ा संदेश देना चाहिए, जो दुस्साहस का प्रदर्शन करते हैं। उचित होगा कि राज्य सरकारें केन्द्र के बताए रास्ते पर चलें। वोट बैंक की राजनीति ने ईमानदारी का हरण कर लिया है। अधिकांश राजनेताओं ने राजनीति को भ्रष्टाचार का माध्यम बना लिया है। ईमानदारी से ही विकास संभव है। क्या हमारी सरकारें इस ओर ध्यान देंगी, और राष्ट्र को विकासोन्मुख बनाएंगी?

-वेद प्रकाश
द्वारिका, नई दिल्ली

चीन से सबक क्यों नहीं?

महोदय,

चीन हमारा पड़ोसी देश है। 2015 तक चीन विश्व की सबसे मजबूत आर्थिक शक्ति के रूप में उभर कर आने को तत्पर है। क्यों? चीन की भाषा, संस्कृति, और विचारधारा में किसी भी अन्य देश का दखल नहीं है। चीन में अधिकांशतः केवल चीनी भाषा का प्रयोग होता है, चाहे वह राष्ट्रपति हो, या सेनापति। समस्त वैज्ञानिक, तकनीकी, चिकित्सा, सांस्कृतिक आदि में केवल चीनी भाषा का ही प्रयोग किया जाएगा। चीनी नागरिक विदेशों में भी चीनी सभ्यता की ही पहचान बनाने में निपुण हैं।

इसी कारण चीन के प्रत्येक नागरिक में स्वाभिमान की झलक मिलती है। भारत में अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों, गोष्ठियों आदि में चीन देश के तकनीकी, विद्वान केवल चीनी भाषा का प्रयोग करते हैं, केवल परिस्थितियों को देखते हुए अन्य भाषा प्रयोग करते हैं। यदा कदा भारत में विगत एक दशक से चीनी तकनीशियन विभिन्न परियोजनाओं में कार्य कर रहे हैं। परन्तु उनकी कार्यशैली पूर्णतया चीनी तकनीक है बोलचाल के अलावा खानपान भी चीन के अनुरूप है। इसलिए चीन का प्रत्येक नागरिक राष्ट्रभक्त है।

-कृष्ण मोहन गोयल
बाजार कोट, अमरोहा

घटता हिंद, हिंदुत्व व हिन्दी

महोदय,

1250 वर्ष पूर्व का आर्यावर्त (वैदिक भारत) का मानचित्र देखें तो यह काफी विस्तृत रुप से फैला हुआ दिखता है, जिसमें गंधार, अफगानिस्तान, तिब्बत, नेपाल, भूटान, ब्रह्मदेश, श्यामदेश, सुमात्रा, जावा आदि देशों का समावेश है। धीरे-धीरे ये सिकुड़ता गया और वर्तमान में यह आर्यावर्त काफी सिमित क्षेत्र में रह गया है।

हिन्दु धर्म विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है तकरीबन एक अरब लोग इस धर्म का पालन करते हैं। देश में हिन्दुओं का प्रतिशत 88 प्रतिशत से घटकर 81 प्रतिशत रह गया है व तथाकथित अल्पसंख्यकों की संख्या इस अनुपात में काफी बढ़ रही है। मुसलमानों की आबादी 25 करोड़ हो गयी है, जो 7 जिलों में बहुमत में आ गए हैं। विश्व में सबसे ज्यादा मुसलमान भारत में हैं फिर भी अपने आपको अल्प संख्यक मानते हैं। एक शोध- पी.यू. डेमोग्राफीक स्टडी के अनुसार पूरे विश्व में हिन्दू 27.8 प्रतिशत हैं जो भारत, नेपाल व मॉरीशस में रहते हैं। चीन हिन्दू धर्म को परीमीटेड रिलीजन में शामिल नहीं करता है। चीन में हिन्दुधर्म स्वीकृत (पसरमीटेड) धर्मों में नहीं है।

इसी तरह हिन्दी की लोकप्रियता भी घट रही है। विश्व की चौथी भाषा हिन्दी विश्व में 4.46 प्रतिशत लोगों द्वारा ही बोली जाती है। जरुरत है समय रहते इस तरफ ध्यान देने और आर्यावर्त, हिन्दुत्व व हिन्दी भाषा का क्षेत्र बढ़ाने में अपना सक्रीय योगदान देवें।

टेकड़ीवाल परिवार
८६/९२, सीताराम पोद्दार मार्ग, मुम्बई-४००००२

प्रत्येक नागरिक को कानूनी जानकारी आवश्यक

महोदय,

भारत के प्रत्येक नागरिक को कानून की जानकारी होनी चाहिए। कानून के अनुसार अगर कुछ करना गलत है, तो वह गैरकानूनी है, चाहे उसके बारे में जानकारी न भी हो, किसी भी राष्ट्र एवं समाज में कानून व्यवस्था कायम रखने में यह महत्वपूर्ण है कि हम नागरिक के रूप में अपने अधिकारों को जाने-समझें. जो हमें भारतीय संविधान में प्रदान किये गये हैं। यह भी किसी से छिपा नहीं है कि देश की दो-तिहाई आबादी को सस्ती दर पर खाद्यान्न उपलब्ध कराने की योजना के लिए जैसे कानून की आवश्यकता है, वैसा नहीं है।

केन्द्र सरकार को इस तरफ भी गौर करना चाहिए कि जिस सार्वजनिक वितरण प्रणाली के जरिए निर्धन तबके को सस्ती दर पर आनाज उपलब्ध कराने की योजना बनायी जा रही है, वह कानूनी दायरे में हो, और भ्रष्टाचार व अव्यवस्था से पूरी तरह दूर हो। आयोजकों द्वारा भले ही कानूनों की संख्या बढ़ाई गयी हो, और नियमों का तड़का लगाने की कोशिश की गयी हो, परन्तु जनता को वाजिब अधिकार भी नहीं मिल रहे हैं। सही कामों के लिए नेताओं को आगे आना चाहिए।

-अतुल कुमार शुक्ला
लाइन पार, मुरादाबाद

www.thearyasamaj.org

नारी नर से हीन नहीं

नवदीप शर्मा

वेद में केवल मनुष्य जाति है, पुरुष और स्त्री को वर्ग बताया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
वैदिक काल में नारी का ऊंचा बहुत स्थान था,
गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा का जग में बड़ा मान था।
ब्रह्मचारिणी रहती थी, आचरण उनका महान था,
वेद विद्या में पारंगत यों, होता शंकाओं का समाधान था।
लीलावती ने गणित विद्या में, भारत मां का मान बढ़ाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
भक्त नारियों का जीवन भी, श्रेष्ठ और महान था।
शबरी, मीरा और रजिया का भक्ति में उच्च स्थान था।
ऋषि मार्ग को नित्य बुहारना, शबरी का मुख्य काम था,
कंदमूल का भोजन और फूस की कुटिया उसका धाम था।
विष के प्याले और विषधर को, मीरा ने गले लगाया।
नर और नारी नें भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
दुर्गाबाई, चेनम्मा, अहल्या और लक्ष्मीबाई भी महान थीं,
रणभूमि में डटी रहीं, तब ऊंची उनकी शान थी।
जीनत महल और रजिया बेगम भी स्वदेश पर कुर्बान थीं,
मातृभूमि रक्षार्थ मरना, उनकी अपनी आन थी।
वीरांगनाओं का देश शौर्य, था दुश्मन भी घबराया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
रानी कर्णवती ने भी चित्तोड़ दुर्ग में हुंकार लगायी,
सैन्य सहायता मंगवाने खातिर, राखी हुमायूं को भिजवायी।
शत्रु सिर पर आन चढ़ा, तब उसने चिता चुनवायी,
निज आन-बान मर्यादा हेतु, अग्नि में छलांग लगायी।
देर से पहुंचा हुमायूं वहां, सब दृश्य देखकर पछिताया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
विद्योतमा भी अपने समय में, थी संस्कृत की विदुषी महान,
कालीदास को महामूर्ख तब, मानता था सकल जहान।
पत्नी की फटकार से वह, बन गया था बड़ा विद्वान,
अस्ति कसति वाक्विशेष से रच दिये तीन काव्य महान।
अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक रचकर, महापण्डित कहलाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
सावित्री फुले बाई ने भी नारि का सम्मान बढ़ाया था,
एनीबेसेन्ट, सरोजनी, कस्तूरबा ने, साहस खूब दिखाया था।
भारत की आजादी खातिर, सबने अलख जगाया था,
इन्दिरा गांधी ने दुनिया में, ऊंचा नाम कमाया था।
नूरजहां, लता और ऊषा ने मधुर स्वर संगीत रचाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।
किरण बेदी और दीपा महेता ने, पुलिस को दी नयी पहचान,
कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में, खूब बढ़ाया भारत का मान।
नारी नर से हीन नहीं, सदा ऊंचा रहा है इनका स्वाभिमान,
बेटे से ज्यादा बेटी ने सदा बढ़ाया कुल गौरव मान।
बेटों से बेटी कम नहीं, बेटी ने ही जगत रचाया।
नर और नारी में भेद नहीं, यह प्रमाण सहित समझाया।।

-पुत्र श्री देशराज आर्य (सेवानिवृत्त प्रिंसिपल)
७२४, सैक्टर-४, रेवाड़ी (हरियाणा)

ग़ज़ल

प्रकाश प्रजापति

आंकड़ों का फलसफा है आज की संसद
सत्ता का अंधा नशा है आज की संसद
कागजी घोड़ों की दौड़ कैसी सरपट चाल है
वायदों का सिलसिला है आज की संसद
भूख की पैमाइशों पर फिर बहस
बहस का अंधा कुआं है आज की संसद
श्री को हरने में लगे हैं माननीय मान सब
श्रीमानों का दबदबा है आज की संसद
चोर और कोतवाल साथ बैठते जहां 'प्रकाश'
समता का ऐसा थला है आज की संसद

-सुबोध नगर, अमरोहा

प्रभु-दृष्टि

देवनारायण भारद्वाज 'देवातिथि'

तव कण-कण चक्षु बहार प्रभो।
टुक मेरी ओर निहार प्रभो।।
निज हस्त हृदय मस्तक मेधा।
करके संयुक्त शक्ति त्रेधा।
मैं तुम्हें नमस्ते करता हूं,
कट जाएं खेद भेद संधा।
दे सुख उत्सव उनहार प्रभो।
टुक मेरी ओर निहार प्रभो।।1।।
दो अन्न मुझे मृदुप्रद पोषक।
दो पाचन शक्ति साथ रोचक।
श्रम से पुरुषार्थ प्रेम पगता,
जीवन ही यज्ञ बने योजक।
व्यवहार वरे यशहार प्रभो।
टुक मरी ओर निहार प्रभो।।2।।
श्रम कवि कर्मण्य बनाता है।
हर ओर तेज दमकाता है।
तब ब्रह्मवर्स से सज मानव,
नभ मण्डल पर छा जाता है।
ले भेंट नमन मनुहार प्रभो।
टुक मरी ओर निहार प्रभो।।3।।

स्रोत- नमस्ते अस्तु पश्यत मश्य मा पश्यत। अन्नान्येन यशसा तेजसा ब्राह्मण वर्चसेन।। (अथर्ववेद 13.4 (5)48-49

-'वरेण्यम्' अवन्तिका (प्रथम) रामघाट मार्ग, अलीगढ़ (उ०प्र०)

पद्मा का कर जौहर

विशनलाल वर्मा

कितनी रोती रही अहिल्या
फुटपाथों पर पड़ी पड़ी
कितनी निर्धन निर्बल बाला
व्यभिचारों की भेंट चढ़ीं
कितनी द्रोपदियां नंगी कर डालीं
दुर्योधन ने गली गली
कहां लिखा है लेखा उनका
कितनी बहुएं कहां जलीं
शासन सत्ता कितनी खींची
कानूनों की लक्ष्मण रेखा
दंड दरिंदों को नहीं मिलता
कागज में रह जाता लेखा
आज नहीं है नयी बात ये
युग युग की है गाथा
मद मदान्ध 'इन्द्र' सदा
नारी को रहा सताता
कभी नारी को लक्ष्मी कहता
रातों जागरण कराता
कभी पूजता देवी दर्शन
चरनन शीष झुकाता
नेता समझा वोटर जननी
आरक्षण दिलदाता
मां बहनों पर कुकृत्य हो
तनिक नहीं शरमाता
क्यों रोती है भोली नारी
मंत्री द्वारे खड़ी खड़ी
क्या इनको है नहीं दीखती
विज्ञापन में नग्न खड़ी
करनी हो तो स्वयं रक्षा कर
फिर से चण्डी बनकर
या तो मां बन पूत सपूती
या 'पद्मा' का कर जौहर

-जमना खास, मुरादाबाद

वीरेन्द्र कुमार राजपूत की दो रचनाएं

अथर्व रस रंग

मंत्र-
सर्व तद्राजा वरुणो वि चष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात्। संख्याता अस्य निमिषो जनानामक्षामिव श्वघ्नी नि मिनोति तानि।। 4,16,5।।

गीत- हर वक्ता देखता है प्रभुवर, न ढील करता।।
गृहणीय सर्वश्रेष्ठ होने से जो वरुण है,
नाना गुणों से पूरित होने से सगुण है,
रहता सदा सजग जो, राजा जगत का ऐसा,
हर वक्त देखता है प्रभुवर न ढील करता।।
जो कुछ भी भूमि, द्यु अरु उससे भी जो परे है,
प्रभु देखता स्वयं ही उसको नहीं टरे है,
ऐसा नहीं है कुछ भी जो ज्ञान न उसे हो,
सब पर ही अपनी दृष्टि होकर हठील धरता।।
जैसे कि एक जुआरी पासों को नापता है,
वैसे वो पलक तक के झपकों को नापता है,
गिनता है सत्कर्म जो नर ने कभी किये हैं,
झोली में दुष्कर्म के जितने करील भरता।।

मैं हूँ आर्यसमाजी नार

गीत

(धुन ब्रजभाषा लोकगीत)

मैं हूं आर्यसमाजी नार, नहीं मैं पत्थर पूजूंगी।।
आदमी ने है इसे गढ़ा, हुआ वह इससे बहुत बड़ा,
छोड़ पत्थर की मूरत आज, उसी को चलकर ढूंढूंगी।।
अरे यह पत्थर का भगवान, नहीं है इसमें कोई जान,
नहीं क्यों यह खाता पोता, अगर बोले है तो पूछूंगी।।
हमेशा रहता है नाराज, नहीं करता है कोई बात,
संग अपने जो गाए गान, बनी कोयलिया कूजूंगी।।
मुझे यह लगता डरा डरा, इसी से है यह बन्द पड़ा,
किया इसका जिसने यह हाल, उसी पर जमकर टूटूंगी।।
चूहा मिट्टी का था बैठा, उसे बिल्ली ने आ देखा,
नहीं वह उस पर झपटी किंतु, भेद यह घर-घर बूझूंगी।।
पिता माता पति ओ विद्वान, प्रभु ने मूर्ति बनायीं चार,
इन्हीं को पूजूं बारम्बार, नहीं पड़ बिस्तर रूठूंगी।।

-सौरभ सदन, ८, वसन्त कुंज, ३६९/१, बसन्त विहा, फेज-१, देहरादून

मुझे स्वीकारो माता

डॉ० अजय जनमेजय

दादा तुम वट वृक्ष हो, मैं हूं नन्हीं अंश
मुझको आकर झेलना, दुनिया का हर दंश;
फिर पोते से ही भला, चलता है क्यूं वंश
मुझे स्वीकारो दादा, न असमय मारो दादा।
दादी सब हैं एकमत, तुम घर की सरताज
तेरी सुलझी सोच से, बनते बिगड़े काज;
तुम चाहे तो मैं जिऊं, टलें खड़े यमराज।
मुझ स्वीकारो दादी, न असमय मारो दादी।
पापा ये बिटिया मुम्हें, करती पल-पल याद
खेलूं तेरी गोद में बस इतनी फरियाद;
आएगी कैसे हंसी, पापा मेरे बाद
मुझे स्वीकारो पापा, न असमय मारो पापा।
माँ को भी समझाऊं क्या, मैं बेटी का अर्थ
आंचल, कंगन, बेटियां, नारी सदा समर्थ;
कन्या हूँ, क्या इसलिए मेरे साथ अनर्थ
मुझे स्वीकारो माता, न असमय मारो माता।

४१७- रामबाग कालोनी, सिविल लाइंस बिजनौर (उ०प्र०) मोबा. : 09412215952

लघु कथाएं

कृष्णमोहन गोयल

(१) एक वृद्धाश्रम के संचाल के पास एक युवा दम्पति आये, और वृद्धाश्रम के नियमों के विषय में वार्तालाप किया। संपादक महोदय ने सोचा कि शायद यह अपने माता-पिता को वृद्धाश्रम में प्रवेश दिलाना चाहते हैं कुछ क्षण पश्चात् युवा दम्पति ने आपस में विचार विमर्श किया, और वृद्ध आश्रम का अवलोकन किया। तत्पश्चात् उन्होंने अपने पर्स से चैकबुक निकाली और एक चैक पर हस्ताक्षर कर, संचालक से कहा कि एक वृद्ध दम्पत्ति को एक वर्ष के लिए हम गोद ले रहे हैं। इनके भरण-पोषण हेतु यह राशि सवीकार करें। संचालक उस युवा दम्पत्ति के आगे नतमस्तक हो गये।

(२) एक युवा दम्पत्ति अपने माता पिता के साथ तीर्थ यात्रा पर गये। तीर्थयात्रा के दौरान वह युवा दम्पत्ति अपने माता-पिता को धर्मशाला में ठहराकर घमने चले गये, और अपने गांव में आकर प्रचार कर दिया कि माता-पिता नदी की तेज धारा में बह गये। उनकी आत्मा की शांति के लिए हवन चल रहा था कि गांव वालों ने देखा कि वृद्ध माता-पिता फटेहाल चले आ रहे हैं। गांव वालों ने जब उनसे पूछा, तो उन्होंने अपने बहू-बेटे की कहानी सुनायी।

-बाजार कोट, अमरोहा

वेद वाणी

कुलभूषण आर्य

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो
यज्ञे कण्वन्ति विदयेषु धीराः
यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे
मनः शिव संकल्पमस्तु
-यजु. 34.3

हे परमेश्वर जिसमें कर्म करने वाले कर्मनिष्ठ धैर्ययुक्त विद्वान लोग मन के विजेता दक्ष और युद्धादि में कर्मों को करते हैं, जो अपूर्व सामर्थ्यवाला विलक्षण प्रजाओं के भीतर रहने वाला है,वह मेरा मन धर्मकार्य करने वाला हो, अधर्म का सर्वथा छोड़ देवे। -राजपुरा टाउन

www.thearyasamaj.org

प्रथम पृष्ठ के शेष....

हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य.....

दिशा, प्रवासी भारतीय साहित्यकारों का हिन्दी को अवदान, हिन्दी और भारतीय भाषाएं, हिन्दी का उत्थान कैसे हो, हिन्दी पत्रकारिता व दूरदर्शन, विभिन्न कालों में हिन्दी आदि महत्वपूर्ण विषयों पर शोधपत्रों का वाचन किया गया।

8 जून को नई दिल्ली के इन्दिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के टर्मिनल तीन से स्पाइश जैट-47 बोइंग विमान से सायं 4 बजे भारतीय सहभागियों ने काठमाण्डू के लिए उड़ान भरी, जहां पहुंचकर डीलक्स बसों द्वारा होटल तक पहुंचाने का प्रबन्ध था। इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर एक दिन काठमाण्डू के ऐतिहासिक, प्राकृतिक और सांस्कृतिक स्थलों के भ्रमण के लिए नियत किया गया, जहां पूर्वनिर्धारित बसों के द्वारा पशुपति नाथ मन्दिर, बौद्ध स्तूप आदि स्थलों का अवलोकन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच, मुरादाबाद द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की विस्तृत रूपरेखा पर मंच के संस्थापक व अध्यक्ष डॉ. महेश दिवाकर (चलभाष : 09927383777) ने प्रकाश डाला। महासचिव डॉ. रामगोपाल भारतीय ने प्रगति आख्या प्रस्तुत की। इस अवसर पर डॉ. सुरेश शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), प्रो. शेर बहादुर सिंह (अमेरिका), डॉ. गोविन्दराम अग्रवाल (नेपाल), डॉ. जय वर्मा (यू.के.) डॉ. सावित्री वशिष्ठ (सिंगापुर) आदि सहित देश-विदेश से अनेक महानुभावों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. हरिराज सिंह, पूर्व कुलपति- इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने की। मुख्य अतिथि टी.एम.यू., मुरादाबाद के कुलपति डॉ. आर.के. मित्तल थे। इस अवसर पर डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, डॉ. आनन्द सुमन सिंह, डॉ. विनय पाठक, डॉ. अजय जन्मेजय, डॉ. बाबूराम, डॉ. ओमप्रकाश सिंह, डॉ. रामसनेही लाल वर्मा 'यायावर', डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी, डॉ. करुणा पाण्डेय, डॉ. बीना रुस्तगी, डॉ. अशोक कुमार आर्य, डॉ. वन्दना रानी गुप्ता, डॉ. संयुक्ता चौहान, डॉ. मयंक पंवार, डॉ. मीना कौल, डॉ. अभय कुमार, डॉ. अरुण रानी, डॉ. आशा पाण्डेय, डॉ. विजय वेदालंकर, डॉ. ईश्वर सिंह सांगवाल, डॉ. रामस्वरूप उपाध्याय, डॉ. मिर्जा हासम बेग, डॉ. किश्वर सुल्ताना, डॉ. रणधीर सिंह, डॉ. राजकुमारी शर्मा, डॉ. धन्य कुमार, डॉ. जयकुमार, डॉ. मनोज कुमार 'मनोज', डॉ. सुमन अग्रवाल, डॉ. राकेश अग्रवाल, लक्ष्मी खन्ना सुमन, देवेन्द्र सफल, योगेन्द्रपाल विश्नोई, डॉ. सतीश कदम, डॉ. नथमल झंवर, डॉ. ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग', डॉ. मीना अग्रवाल, डॉ. विवके निर्मल, चरणसिंह सुमन, अशोक कुमार ज्योति, रामसिंह निशंक आदि सहित अनेक साहित्यकार, हिन्दीसेवी व पत्रकार उपस्थित थे। समारोह के अन्त में संस्थापक अध्यक्ष डॉ. महेश दिवाकर, डी.लिट् ने सभी सहभागियों का हार्दिक आभार व्यक्त किया। 11 जून को सभी भारतीय सहभागियों ने स्पाइश- बोइंग विमान से सायं 6 बजे नई दिल्ली के लिए उड़ान भरी। इस प्रकार चारदिवसीय यह अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन मधुर स्मृतियों के रूप में सभी के हृदय-पटल पर अंकित हो गया।

डरबन चलो..

विश्वभर के आर्यों से अपील की है कि वे डरबन में होने वाले इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पधार कर आर्य समाज के वैश्विक स्वरूप को साकार करें। उल्लेखनीय है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की यह नवीन श्रृंखला सन् 2006 में दिल्ली के रोहिणी पार्क से शुरु हुई तदोपरांत अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, नीदरलैण्ड, और पुनः भारत के बाद इस बार दक्षिण अफ्रीका में एक नई कड़ी जोड़ रही है। (महासम्मेलन के विषय में विस्तृत जानकारी आगामी अंकों में पढ़ें।)

माहेश्वर तिवारी....

रोहतक ने उनके तीन गीत अपने पाठ्यक्रम में शामिल किये हैं।

उल्लेखनीय है कि नवगीत विधा के लिए सम्पूर्ण हिन्दी जगत में प्रसिद्ध डॉ0 माहेश्वर तिवारी की आवाज को आकाशवाणी के केन्द्रीय संग्रहालय हेतु आर्काइव के रूप में जुलाई 2012 में रिकार्ड किया गया है। काव्यजगत में दादा के नाम से विख्यात डॉ0 तिवारी जी की रचनाओं को संगीतबद्ध करने में उनकी सहधर्मिणी विशाखा तिवारी का भी महत्वपूर्ण योगदान है। नवगीतकार तिवारी जी को मिले इस सम्मान से काव्य जगत में हर्ष की लहर है।

कनाडा में २३वां....

कार्यक्रम में आचार्य वैदिक विद्वत्त-गण आचार्य ज्ञानेश्वर (रोजड़, गुजरात), डॉ. देवबाला रामानाथन, डॉ. तुलसीराम शर्मा, डॉ. सूर्य नन्दा, आचार्य वेदश्रमी व्याकरणाचार्य, डॉ. बलवीर आचार्य, स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. वीरेन्द्र अलंकार पधार रहे हैं।

स्वामी दर्शनानन्द....

प्रणेता प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु (अबोहर) के विचार सुनने को मिलेंगे।

इस अवसर पर स्वामी दर्शनानन्द के ग्रन्थ संग्रह एवं स्वामी दर्शनानन्द जीवन चरित्र का लोकार्पण होगा। यह पुस्तकें गोविन्दराम हासानन्द प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की जा रही हैं।

यज्ञ करने से होती है सुखों की वृष्टि : सुमन कुमार वैदिक

प्रतिनिधि
नई दिल्ली

आर्यसमाज देवनगर के साप्ताहिक यज्ञ कार्यक्रम में यज्ञ के पश्चात् पं. अशोक कुमार, नजफगढ़ ने भजन 'मुक्ति का एक साधन यज्ञ, तप, दान है आज भी है और कल भी रहेगा' गाकर सभी का मनमोह लिया। मुख्य वक्ता आर्यावर्त केसरी के प्रबन्ध सम्पादक सुमन कुमार वैदिक ने भगवान कृष्ण के प्रकरण से कहा कि भगवान् कृष्ण से महारानी रुक्मिणी ने एक समय यह प्रश्न किया, कि यह जो आप यज्ञ करते हैं क्यों करते हैं? इससे आपको क्या लाभ? भगवान् कृष्ण ने कहा कि मैं चाहता हूं कि मेरा मिलान परमात्मा से हो जाए, मेरी आन्तरिक भावना परमात्मा से प्रेरित हो। उससे सहायता लेकर त्याग पूर्वक कार्य करता रहूं। यज्ञशाला एक विमान है जो त्याग की भावना देती है। हम जो घृत सामग्री की अग्नि में आहूति देते हैं। अग्नि उन सबको त्याग कर अन्तरिक्ष में रमण करा देती है। जिसे पान कर देवता सुख की वृष्टि करते हैं।

आर्यसमाज के प्रधान पं. नफे सिंह देसवाल ने कहा कि भौतिक यज्ञ के साथ हमें आत्मिक यज्ञ भी करना है जो हमें परमात्मा से मिला देता है। जैसे वेदों ने श्रेष्ठ कर्म के साथ दुर्गा (दुर्गुणों को दूर करने वाला) काली (कालेपन को दूर करने वाला) है।

इस अवसर पर एक्यूप्रेशर चिकित्सक डॉ. नीरू (हरीनगर, नई दिल्ली) ने अपने उद्बोधन बड़े सुन्दर ढंग से रखते हुए कहा कि सदैव चेहरे पर मुस्कान रखें। हमारे हाथ की पाँच उंगली पंच तत्व का प्रतीक है। जुकाम दूर करने के लिए नासिका में सोते समय बादाम रोगन डालें। इससे याद्दाश्त भी बढ़ती है। इसके हाथ के द्वारा रोगों को दूर करने के उपाय बताये। रमेश वेदी ने धन्यवाद दिया तथा अशोक मिश्रा सपत्नीक यजमान रहे।

जनवरी 2014 में सिंगापुर में होगा
अगला अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समारोह
सम्पर्क सूत्र– डॉ0 महेश दिवाकर
संस्थापक अध्यक्ष– अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य कला मंच, सरस्वती भवन
12–मिलन विहार, दिल्ली राजमार्ग, मुरादाबाद–244001
मोबा. 09927383777, 09837263411
ई.मेल : mcdiwakar@gmail.com

शर्मनाक संस्थापक को ही भूल गये पी.एन.बी. वाले

रमेश सिंह एडवोकेट

पंजाब नेशनल बैंक द्वारा प्रकाशित वार्षिक कलैण्डर में शक संवत्, विक्रमी संवत्, तिथियां एवं पूरे वर्ष के त्योहार तथा महापुरुषों की जयन्तियां तिथिवार अंकित हैं, लेकिन बैंक के ही कुलपिता अर्थात् संस्थापक पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की जयन्ती 28 जनवरी का उल्लेख बैंक के द्वारा प्रकाशित कलैण्डर में नहीं मिलता, जिसको देखकर बहुत हैरानी होती है।

हर देश, समाज, जाति, संस्था अथवा व्यक्ति अपने कुलपिता अर्थात् संस्थापक का नाम लेने में अपने को गौरवान्वित महसूस करता है, और जहां तक संभव हो, संस्थापक के नाम को प्रचारित करके समाज में अपनी विश्वसनीयता स्थापित करता है। लेकिन पंजाब नेशनल बैंक अपने कुलपिता की जयन्ती की तिथि का उल्लेख अपने कलैण्डर में न करके कोई श्रेय नहीं लेना चाहता।

इस संबन्ध में मुख्य शाखा मुरादाबाद के शीर्ष अधिकारी को बताया, तो उन्होंने बैंक की ओर से गलती मानते हुए अग्रिम वर्ष में सुधार किए जाने की बात कही और कहा कि अब आपको कहीं लिखत-पढ़त करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बड़ी उत्सुकता के साथ कि इस बार उस महान क्रान्तिकारी, जिसने देश की आजादी के लिए किये जा रहे संघर्ष में देश को आर्थिक रूप से मजबूत करने की भी बात सोचकर इस बैंक की भी स्थापना की उस महान व्यक्तित्व का उल्लेख उसी के बैंक में अपने कलैण्डर मे कर दिया होगा, सिविल लाइन्स स्थित बैंक में जाकर देखा, तो बड़ी निराशा हुई। बैंक द्वारा ही अपने क्रान्तिकारी संस्थापक की जयन्ती का अपने ही कलैण्डर म एवं डायरियों में प्रकाशित न करना यह प्रदर्शित करता है कि बैंक के शीर्ष अधिकारीगण भी अपने कुलपिता-संस्थापक को ही भूल गये हैं। उनको अपने संस्थापक की जीवनी का ही नहीं पता। जब बैंक के अधिकारी ही संस्थापक की जयन्ती की तिथि को नहीं जानते, तो देश की जनता क्या जानेगी कि पंजाब नेशनल बैंक की स्थापना पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने की थी।

यह महान भूल लगातार पता नहीं कब से बैंक द्वारा की जा रही है। बैंक के संस्थापक कोई सामान्य व्यक्ति अथवा कोई धनाढ्य व्यक्ति नहीं थे, अपितु वह देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले क्रान्तिकारी थे। उनके किसी भी कार्य को महत्व न देने का आशय देश के प्रति धोखा है।

पं० हरिशंकर सिद्धांतालंकार कृत चतुर्वेद भाष्य
चौदह खण्ड, ८६ पृष्ठों में प्रकाशित
प्रकाशक : घूड़मल प्रह्लाद कुमार आर्य धार्मार्थ न्यास (हिण्डौन)
इस सहज समझ आने वाले वाले भाष्य के लिए बड़े परिश्रम से वेद के गूढ़ार्थ को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है।, जिसमें मंत्रों पर स्वर लगाए गये हैं। प्रत्येक शब्द का हिन्दी भाषा में अर्थ तथा भावार्थ दिया गया है।
3600 (तीन सहस्र छः सौ रुपये में चारों वेदों के साथ 3500 रु0 मूल्य की पुस्तकें उपहार में दी जाएंगी। वेद आर्ष कन्या गुरुकुल नजीबाबाद से अथवा 3600 रुपये भेजकर प्राप्त किये जा सकते हैं।
जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
डॉ० प्रियंवदा वेदभारती, मोबा. : 9412824424

आवश्यकता है
वैदिक श्रीमद्दयानन्द आर्ष कन्या महाविद्यालय, नवलपुर (जीवनपुरी), पोस्ट-धर्मनगरी (बिजनौर) को 1. आचार्या (योग्यता- स्नातिका गुरुकुल, अचार्य/एम0ए0 संस्कृत, 2. आचार्या- साइंस, अंग्रेजी।
शीघ्र सम्पर्क करें-
प्राचार्या
मोबा. : 7520696932

www.thearyasamaj.org

परमात्मा का ज्ञान आत्मा से प्रेरित : आदित्य

आदित्य प्रकाश गुप्त

इतना तो सभी लोग निर्विवाद स्वीकार करते हैं कि वेद मानव जाति का प्राचीनतम् ग्रन्थ है। मानव सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने वेदों का प्रकाश सभी मनुष्यों के हितार्थ अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा चारों ऋषियों के हृदयों में किया। जितने ज्ञान की मनुष्यों को अपने जीवन में प्रयोग के लिए आवश्यक था। इस प्रकार सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर वेदों का ज्ञान ऋषियों की आत्मा में देता है। तब मुख आदि साधनों की आवश्यकता नहीं होती। परमात्मा के आत्मा में व्यापक होने के कारण परमात्मा के ज्ञान को आत्मा, परमात्मा से ग्रहण कर लेता है। जब आत्मा बुद्धि के द्वारा उस ज्ञान को मन तक पहुंचा देता है। मन वाणी को देता है। ऋषियों की वाणी से कानों को मिलता है। परमात्मा का ज्ञान आत्मा से प्रेरित होता है। उसकी संज्ञा वेद है। ऋषियों ने प्राप्त ज्ञान का उच्चारण किया जब अन्य द्वारा सुना गया, वह श्रुति कहलाया। ऋषियों को ईश्वर की वाणी का ज्ञान प्राप्त करने का सौभाग्य हुआ यह ज्ञान उन ऋषियों का नहीं था। ऋषि उन मन्त्रों के निर्माता नहीं थे। केवल मंत्र दृष्टा थे।

वेद ज्ञान अपोरुषेण ज्ञान है अर्थात स्वत: उत्पन्न होने वाला ज्ञान है। वेद ज्ञान विज्ञान कर्म उपासना का स्रोत है। वेदों में समस्त विद्याऐं बीज रुप में विद्यमान हैं। इसलिए महर्षि दयानंद जी ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में लिखा है " वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

जिस प्रकार धूप, वायु आदि पदार्थ परमात्मा ने सभी मनुष्यों के लिए दिए हैं। सृष्टि में सभी मनुष्य एक थे। बाद में स्वार्थवश हमें अलग-अलग जाति व मतों में बांटा गया। इस विषय में मेक्स मूलर का कथन है कि वेदों को हम इसलिए आदि सृष्टि से कह सकते हैं कि उससे पूर्व कोई अन्य निश्चित चिन्ह नहीं मिलता वेदों की भाषा भी आदि सृष्टि में है तथा वैदिक धर्म आदि सृष्टि से हैं। वेदों का प्रत्येक अक्षर प्रमाणिक लेख है। महर्षि दयानंद महाराज ने अपने समय वेद का प्रचार किया। सभी संसार के लोगों को वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया। उनके पश्चात लगभग 80 वर्ष तक वेदों का प्रचार शास्त्रार्थो एवं उत्सव के माध्यम में बड़ी मात्रा में चला। अब उनके उत्तराधिकारियों का कर्त्तव्य है कि नये जमाने के साथ प्रचार के नये-नये ढ़ंग अपनाये जायें परंतु हममें जितनी शिथिलता आ गयी है, आप स्वयं समझ सकते हैं। आर्यसमाज खेड़ा अफगान और हमारे न्यास वैदिक संस्कृति न्यास द्वारा नये-नये तरीके अपनाकर वेद का प्रचार किया जा रहा है। 1. वर्षो से लगातार प्रतिवर्ष वैदिक ज्ञान वर्धिनी प्रतियों कराई जाती हैं। जिसमें क्षेत्र के 10 पन्द्रह इंटर कालेज के 500 विद्यार्थी भाग लेते हैं।

पहले वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी जिसमें लगभग 500 प्रश्न-उत्तर हैं बांटी जाती है। फिर प्रतियोगिता कराकर उर्त्तीर्ण होने वाले विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र और वैदिक साहित्य बांटा जाता है। 2. प्रतिवर्ष कलेन्डर छपवाकर बांटा जाता है। 3. अब तक लगभग 50 हजार पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। हमारी आर्य समाज द्वारा लगातार प्रकाशन किया जा रहा है। क्षेत्र को गौभक्तों और वैदिक विद्वानों को उत्सव पर सम्मानित किया जाता है। 5. नववर्ष और सभी पर्व धूमधाम से मनाये जाते हैं तथा नववर्ष पर स्टीकर छपवाकर बांटे जाते हैं। 6. निकट के सभी अध्यापकों को एकत्र कर अध्यापक शिविर चलाये जाते हैं।

तात्पर्य यह है कि यदि आर्य समाज अध्यापकों और विद्यार्थियों को नये-नये साधन अपनाकर वेद का परिचय करायें तब ही हमारे सामने आने वाली सभी समस्याओं का समाधान होगा। क्योंकि सभी समस्याओं का समाधान निश्चित रुप से वेदों में है। परन्तु हमें वेदों का प्रचार करने और अपने जीवन में उतारने से ही प्रयास सफल होगा। ऋषि ऋण उतरेगा।

अध्यक्ष
वैदिक संस्कृति, उत्थान खेड़ा
अफगान सहारनपुर

ग्रीष्म ऋतु में नींबू का प्रयोग अवश्य करें

कृष्णमोहन गोयल

1. सुबह खाली पेट नींबू का पानी पीने से कब्ज की शिकायत नहीं होती, तथा रक्त शुद्ध होता है। यह अमृत समान है। 2. एक गिलास शीतल जल में नींबू का रस, दो चम्मच शहद के साथ पीने से गर्मी में राहत मिलती है। साथ ही हैजा आदि संक्रामक रोगों से बचाव होता है। लू से बचाव होता है। 3. मुंह के रोगों, जैसे बदबू आना, मुंह के छाले, मसूड़ों की सूजन, पायरिया आदि रोगों में नींबू के पानी के कुल्ले करना चाहिए। 4. सिर के बालों को नींबू के पानी से धोने से लाभ होता है। रूसी, गंदगी, जूं आदि से बचाव होता है। 5. सफर में नींबू और काला नमक अवश्य साथ रखें। 6. गुलाब जल में नींबू का रस मिलाकर चेहरे पर मलने से फायदा होता है। मुंहासे भी गायब हो जाते हैं। 7. एक चम्मच नींबू का रस, एक चम्मच शहद और एक चम्मच केला सेवन से पीलिया व पेचिस में लाभ होता है।

बाजार कोट,अमरोहा

यात्रा — टंकारा यात्रा के कुछ पल

सुमन कुमार 'वैदिक'

भारतीय पुर्नजागरण के पुरोध ा, स्वनाम धन्य महर्षि दयानंद सरस्वती की पुण्य जन्म भूमि टंकारा ही है। यह प्रतिपाद्य होने पर टंकारा ऋषिभक्तों के लिए श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। गुजरात राज्य के मौरवी जिले के टंकारा ग्राम में करसन तिवारी के यहां 1824 ई. में मूलशंकर को माता अमृतबेन ने जन्म दिया था। यह तो ऋषिगाथा लिखकर कवि ने सबको याद करा दिया। किन्तु जिस धूली में बालक मूलशंकर खेला, उस धूली का एक बार स्पर्श कर, उस कुबेरनाथ के शिवालय को देखें जहां से मूलशंकर ने सच्चे शिव को प्राप्त करने की प्रेरणा ली थी। उसे देखने की इच्छा लिये हम 25 लोग 8 मार्च को बरेली-भुज एक्सप्रेस से रवाना हुए। यात्रा को सुखद बनाने हेतु डा. अशोक कुमार आर्य सम्पादक आर्यावर्त केसरी द्वारा वैदिक/ ब्रह्मचारी कृष्णदत्त से संबोधित साहित्य, जलपान एवं भोजन पैकेट दिये गये। हमारे कोच के बाहर लगी ओइम् की झण्डियों को देख अनेक आर्यबंधु मार्ग से जुड़ते गये। टंकारा तक हंसते, भजन गाते हम लोग पहुंचे। जहां देशभर में सन्यासी, वानप्रस्थी, श्रेष्ठी, गुरुकुल आर्यसमाजों के प्रतिनिधि और आमजन आ रहे थे।

टंकारा ट्रस्ट की ओर से विशिष्ट अतिथियों के लिए सुन्दर व्यवस्था की गयी थी। गुजरात में गौवंश की बहुत सेवा की जाती है, किन्तु ट्रस्ट की गऊशाला जो की मंदिर के बराबर में ही थी। जिसमें लगभग सौ गऊ थीं। वहां के बारे में स्थानीय लोगों का विचार था कि यहां गुरुकुल के ब्रह्मचारियों से सेवा करायी जाती है। आज हमें स्वामी दयानंद के विचारों को बढ़ाना है, तो पहले टंकारा भूमि को तो ऋषि भूमि बना दें। इस विचार को लेकर टंकारा की यात्रा करें। 6 मार्च से 10 मार्च तक यजुर्वेद परायण यज्ञ का आयोजन में यजमान योगेश मुंजाल ही रोहोण्डा समूह रहे। कार्यक्रमों को टंकारा ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने सम्बोधित किया। 10 मार्च को ही टंकारा आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज के परिसर में मनाया गया। जहां स्वामी शांतानन्द कच्छ का उद्‌बोधन हुआ।

इस समाज की स्थापना 11 फरवरी सन 1926 को स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी शंकरानंद, प्रो. रामदेव गुरुकुल कांगड़ी की उपस्थिति में की गयी। टंकारा में आर्य समाज ऋषि स्मारक 9 बीघा का सुमन उद्यान बनाने वाले गिरधर लाल मेहता ने अपने जीवन को हूतकर इस आर्य समाज को बनाया।

इसी कड़ी में मगनलाल भगवान जोशी के महत्व को नहीं भुलाया जा सकता। जिन्होंने मोरवी राज्य परिवार से राजमहल खरीदकर ऋषि स्मारक हेतु दान दिया। महात्मा आर्य भिक्षु जी द्वारा स्थापित कोष से यज्ञ ज्योति निरंतर जलती रहती है। शिवरात्रि पर शोभायात्रा निकाली गयी जिसमें आर्यसमाज जोधपुर, राजकोट, अंबाला, गुड़गांव, पलवल तथा जनकपुरी के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच काना भाई, विधायक मोहन भाई, क्रभकों चेयरमैन बाजवी भाई, धर्मेन्द्र शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

11 मार्च को हम गुजरात भ्रमण को निकलें। शहरों में गऊवंश खूब घूमते मिला तब ध्यान आया कि इसी कारण यहां डेरी व्यवसाय है। गुजरात की प्रगति सम्पन्नता में सुन्दर स्वच्छ सड़कों का भी कम योगदान नही है। ट्रैफिक जाम, सड़कों के किनारे या गांव/ नगर में कोई फलैक्सी बैनर/ होल्डिंग या किसी नेता का फोटो दिखाई नहीं दिया। द्वारिका से सोमनाथ तक समुन्द्र के किनारे के ग्रामों में विद्युत उत्पादन करने वाली पवन विद्युत के उपकरण बहुत सुन्दर लग रहे थे। भगवान कृष्ण की नगरी द्वारिका के मन्दिरों से होकर हमने पोरबंदर आर्यसमाज में रात्रि विश्राम किया।

सेठनान जी भाई कालीदास मेहता जिन्होंने पोरबन्दर में कन्या गुरुकुल, क्रांति निवास तथा हरिद्वार में आर्य निवास हेतु तथा टंकारा ट्रस्ट हेतु राशि दी। ऐसी प्रेरणादायी महापुरुष की प्रेरणा से स्थापित आर्य समाज पोरबंदर आज भी महर्षि दयानंद के मार्ग पर अग्रसरित हो अपने कर्तव्य पर अडिग हैं।

अतिथि सेवा को यज्ञ मानने वाले आर्यसमाज के सभी पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं। अतिथियों के निवास और भोजन की निशुल्क व्यवस्था करना अपना दायित्व मानने वाले प्राणी मात्र की सेवा को धर्म मानने वाले प्रधान एचके मीतीवरम एवं मंत्री धनजीभाई आर्य हैं। 02 मार्च को सारनाथ के सुन्दर रमणीक स्थानों का भ्रमण करते हैं। अहमदाबाद, काकरिया आर्यसमाज में विश्राम किया, जहां पुरोहित जी ने सपरिवार अतिथि सत्कार किया। 13 मार्च को यात्रा वापस चलकर सभी अपने-अपने घर पहुंचे।

अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें

वेदप्रचार सप्ताह, वार्षिकोत्सव, पारायण यज्ञों के अनुष्ठान, वेदकथा, प्रवचन एवं वैदिक सौलह संस्कारों हेतु सेवा का अवसर प्रदान करें।
नोट :- समय-प्राप्ति के लिए कम से कम तीन माह पूर्व सम्पर्क करें।

पं. सुनील दत्त शास्त्री (वैदिक प्रवक्ता)

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज, फिरोजपुर शहर (पंजाब), पिन- 152002
मोबा. : 9465810156

www.thearyasamaj.org

राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद

अभिमन्यु कुमार खुल्लर

सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना शासक जाति अंग्रेज के ए.ओ.ह्यूम ने भारत को स्वतंत्रता दिलवाने के लिये नहीं की थी बल्कि अंग्रेजी सत्ता का वर्चस्व सदा, सर्वदा बनाये रखने के लिये की थी।

महर्षि दयानंद ने 1975 में आर्यसमाज की स्थापना भारत को एक सर्वोन्नत, सर्वतंत्र, स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिये की थी। अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में महर्षि ने स्पष्ट घोषणा की है कि विदेशी राज्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, वह अपने राज्य से बढ़कर नहीं हो सकता। बाल गंगाधर तिलक ने जयघोष किया- **"स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूँगा।"**

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने सन् 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। उनका मंत्र था कि युवा राष्ट्रीय शक्ति को एक सूत्र में पिरो दो, राष्ट्र स्वयं ही उठ खड़ा होगा। यह बड़ी आसानी से राष्ट्र गौरव व देशप्रेम की भावना कोमल मनमस्तिष्कों में भरकर किया जा सकता है। स्थापना से लकर आजतक संघ की इस विचारधारा में किंचित मात्र भी परिवर्तन नहीं हुआ है। संघ के द्वार प्रारंभ से लेकर आज तक प्रत्येक हिन्दू के लिये खुले हैं। यहाँ 'हिन्दू' से आशय हिन्दुस्तान (भारत के निवासियों से है, जाति विशेष से कदापि नहीं।

इस घोर राष्ट्रवादी संगठन को भारत सरकार के गृहमंत्री सुशीलकुमार शिन्दे "आतंकवादी" संगठन घोषित कर रहे हैं। किसी भी छोटे-बड़े कांग्रेसी ने उनके कथन का विरोध नहीं किया है, इसलिये यह पार्टी व सरकार दोनों का ही अभिमत मानना चाहिए। यह विनाशक तत्व नई पीढ़ी को घुट्टी में पिलाए जा रहे हैं। राष्ट्रनिर्माण की कांग्रेसी सोच 'धन्य' है। यह सर्वमान्य सोच है कि जो जाति अपने इतिहास को सुरक्षित नहीं रखती। अपने ऐतिहासिक पुरोधाओं से अनुप्राणित नहीं होती, वह मिट जाती है। षडयंत्रकारी, कुचक्री, स्वार्थी राजनीति अपने देश में ही पूर्ववर्ती पुरूषों की महिमा को नष्ट कर अपने वर्चस्व, अपने गुणगान कराने में महारत हासिल कर लेते हैं। सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, डॉ. पुरूषोत्तम दास टण्डन, लाल बहादुर शास्त्री, अब कैलेण्डरों में लाल रंग की शोभा बढ़ाते हैं। महर्षि दयानंद व स्वातंत्र्यवीर सावरकर को कौन याद करे? मोहनदास करमचन्द गाँधी-माहत्मागाँधी अब 2 अक्टूबर व 30 जनवरी को ही याद किये जाते हैं। अलबत्ता नोट पर उनकी आकृति छापकर कुछ स्थायित्व प्रदान किया है। नहीं तो इण्डिया इज इन्दिरा और इन्दिरा इज इण्डिया का राग जमकर चला। अब चल रहा है- "युवा हृदय सम्राट"। लगता है यह जयघोष भारतीय जनमानस के गले में ठीक-ठीक, जैसा कांग्रेसी चाहते हैं, नहीं उतर रहा है। अब 'बरूआ' जैसे कांग्रेसी भी नहीं रहे, अब उनका स्तर 'दिग्विजयसिंह' जैसा हो गया है। पेट में खलबली मची हुई है। रात की नींद हराम हो गई है। महाकुंभ के अवसर पर हिन्दू साधुसंतों का जमावड़ा राष्ट्रीय जागरण की बात करता है। विद्रोही बाबा रामदेव का प्रशस्तिगान करता है। क्या यह सब उगते हुए सूर्य- नरेन्द्र मोदी के 'राजतिलक' की तैयारी का हिस्सा तो नहीं जिसे वे 'चड्ढीधारी', 'संघी' निरूपित करते हैं। जिसे वे गोधराकाण्ड का 'हत्यारा' कहकर इतिहास में लपेट कर कहीं कुन्ने में फैंक देना चाहते हैं। वही जिसे अमेरिका व यूरोप के देश 'गोधरा काण्ड के कारण वीजा नहीं देना चाहते। हिटलर के जर्मनी का प्रचारमंत्री गोयबल्स भी कांग्रेस के प्रचार तंत्र को देखकर चक्कर में पड़ गया होगा। इतने सशक्त विश्व मीडिया के होते हुए भी यह झूठ कैसे चला कि जिसने वीजा मांगा ही नहीं उसे यह कहकर कलंकित किया जावे कि व्यापक नरसंहार का दोषी होने के कारण उसे वीजा नहीं दिया जा रहा है। आम जन को यह मालूम ही नहीं कि वीजा (अनुमति) वह व्यक्ति मांगता है जिसे दूसरे देश जाना होता है। कोई देश वीजा बांटकर अपने देश बुलाता नहीं है। यह भांडा भी बिल्कुल फूट गया, जब जर्मनी व इंग्लैण्ड के राजनयिकों ने खुद जाकर मोदी से भेंट की। युवा हृदय सम्राट व देश की पुरातन पार्टी की इटली मूल की निवासी का प्रचार तंत्र 'नरेन्द्र' की आंधी को कैसे रोक पायेंगे? नरेन्द्र नाम में ही कुछ चमत्कार है। एक नरेन्द्र ने शिकागों में विश्व धर्म कांग्रेस को हिला दिया। दूसरा नरेन्द्र विश्व राजनीति के ध्रुवीकरण को प्रभावित करने वाला स्पष्ट प्रतीत होता है। बस खतरा है तो खुद की पार्टी के 'मीरज़ाफरों' से व "राष्ट्रीय एकता" के सूत्रधार को भितरघात से। भारतीय मानस को एक सूत्र में पिरोने का एक स्वर्णिम अवसर हमको अपने जीवनकाल में निकट भविष्य में मिलने वाला है। धैर्य से प्रतीक्षा कीजिये। राष्ट्रवाद बनाम आतंकवाद लघु लेख 23 फरवरी 3013 को मैने कुछ पत्रिकाओं को प्रकाशनार्थ प्रेषित किया था। इस सम्बध में टाइम्स ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली संस्करण के 8 मार्च 2013 के अंक में प्रकाशित समाचार के अनुसार अमेरिका की पेनसिबलवेनियां यूनीवर्सिटी के व्हार्टन इन्डिया इकोनॉमिक फोरम में 22-23 मार्च 2013 को आमंत्रित किए जाने का विरोध सफल हो जाने पर अप्रवासी भारतीयों की जोरदार कोशिशों के पश्चात् नरेन्द्र मोदी कर्णावती (अहमदाबाद) से 9 मार्च 2013 को एडीसन, न्यूजर्सी व शिकागो के नागरिकों को सीधे प्रसारण में संबोधित किया।

विस्तृत लेख के कुछ अंशों को जो मेरे लेख की पुष्टि करते हैं, यहां उद्धृत करता हूँ। अमरीकी संसद (कांग्रेस) में सांसद एनी फैलियामेवेगा ने कहा- अमेरिका को उस व्यक्ति से संवाद स्थापित करना चाहिए जो भविष्य में भारत का प्रधानमंत्री हो सकता है। व्हार्टन कान्फ्रेंस से अपना नाम वापिस लेते हुए अमेरिकन एन्टरप्राइस के फैलो सदानन्द धूमे ने वाल स्ट्रीट जौखल के ब्लाग में लिखा- भारतीय अर्थव्यवस्था पर चिंतन करने जा रही उस कान्फ्रेंस को किस प्रकार गम्भीरता से लिया जा सकता है जो उस व्यक्ति को स्थान नहीं दे सकती जो भारत में सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से सफलतापूर्वक कार्य करने वाले राज्य का प्रमुख है और जिसकी उपलब्धियों की विश्व प्रैस में आए दिन चर्चा होती रहती है। रोन सोमर्स जो यूएस इंडिया बिजनेस कांउसिल के अध्यक्ष हैं, ने मोदी को व्हार्टन न बुलाए जाने के निर्णय को दुर्भाग्यपूर्ण और अपमानजनक बताया और उल्लेख किया कि संस्था का उक्त निर्णय अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के संदर्भ के उसे (संस्था को) अत्यन्त निम्न स्तर पर खड़ा करता है।

से.नि. वरि. लेखा अधिकारी (केन्द्र) २२- नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर (ग्वालियर)

संस्कृति के महान आदर्शों से युवकों को रुबरु कराने की जरूरत

बी.एल. टेकड़ीवाल

भारतीय सभ्यता व संस्कृति के आधार गंगा, गाय व तुलसी को जहां मां के रुप में मान्यता दी जाती है, जहां कन्या को 'दुर्गा' समझा जाता है, वहां बढ़ते नारी अपराध-संस्कृति पतझड़ के आसार दिखने लगते हैं। संस्कृति के महान आदर्श इस पतझड़ को बसंत में बदलने की शक्ति रखते है। यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता-भातरीय दर्शन का मूल मंत्र रहा है। भारतीय संस्कृति व सभ्यता में नारी को हमेशा सम्मान, पवित्रता व पावनता के साथ देखा है। हमारी महान सनातन संस्कृति में नारी सम्मान व सदाचार का बड़ा महत्व है :- मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्व भूतेषु च: पश्यति सदपण्डित:। परायी स्त्रियों में माता, बहन, बेटी का भाव, पराये धन में निर्लोभता का भाव, दूसरों में अपने जैसे सुख-दुख का भाव पवित्र करने के साधन हैं आचाराल्लभते आयु: सदाचारी व्यक्ति का आयुर्बल बढ़ता है। हे प्रभो ददता संगमेमहि, अघ्नता संगमे महि, जानता संगमेमहि। हे ईश्वर हमें अच्छी संगति दे, ज्ञानी की संगती दे।

संस्कृति के रक्षक :

आन-मान, मर्यादा, स्वाभिमान के प्रतीक पराक्रमी वीर महाराणा प्रताप के वीर पुत्र अमर सिंह ने युद्ध भूमि में मुगल सेनापति अब्दुल रहीम खां को परास्त कर दिया। उन्होंने तैश में आकर मुगल सरदारों के साथ ही मुगलों के हरम को भी बंदी बना लिया। महाराणा प्रताप को जब यह समाचार मिला तो वह रुग्णावस्था में ही युद्ध क्षेत्र में जाकर अमर सिंह पर गरज पड़े, अमर सिंह ऐसा नीच काम करने से पहले तू मर क्यों नहीं गया। हमारी भारतीय संस्कृति को कलंकित करते तुझे लाज न आई? राणा अमर सिंह पिता के समक्ष लज्जित मुद्रा में खड़े रहे। महाराणा प्रताप ने तत्काल मुगल हरम में पहुंचकर बड़ी बेगम को प्रणाम करते हुए कहा-बड़ी बी साहिबा, जो सिर शहंशाह अकबर के समक्ष नहीं झुका, मैं आपके सामने झुकाता हूँ। मेरे पुत्र अमर सिंह से जो अपराध हुआ, उसे क्षमा करें। हमारे लिए स्त्री पूजनीय है, आप लोगों को बंदी बनाकर उसने हमारी संस्कृति का अपमान किया है। ऐसा ही सम्मान वीर शिवाजी ने अपने हारे हुए दुश्मन की रानी का दिया था।

मातृत्व की विजय :

शिकागो (अमेरिका) के विश्वधर्म- सम्मेलन से लौटते समय स्वामी विवेकानन्द धर्मप्रचार के सिलसिले में सन् 1894-95 ई. में यूरोप का भ्रमण करते हुए जब फ्रांस पहुंचे तो वहां पाश्चात्य संस्कारों वाली एक सम्भ्रान्त फ्रांसीसी सुन्दर युवती ने उनके व्यक्तित्व तथा ओजस्विता से प्रभावित और आकर्षित हो स्वामी से समय मांगकर एकान्त में उनसे विवाह करने की अभिलाशा निवेदित की। विवेकानन्द जी उसके इस अविवेक और दु:साहस पर आश्चर्यचकित हो गये, किंतु उन्होंने बड़े धैर्य संयम स्वर से उससे प्रश्न किया- तुम मुझसे विवाह क्यों करना चाहती हो? युवती का उत्तर था- इसलिए कि मैं आप-जैसा पुत्र अपने लिये चाहती हूँ। सुनते ही स्वामी जी ने तुरंत समाधान किया- तब तो तुम मुझे ही अपना पुत्र मान लो। तुम मेरी माँ हो, माँ। नारी सम्मान हमारी विरासत है। जरुरत है इन सबसे युवा पीढ़ी को रुबरु करवाएं ताकि वे नारी को ऑबजेक्ट न समझें। वैदिक भारतीय संस्कृति में ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान को उच्च माना जाता है। ईश्वर का सर्वत्र वास है। ईश्वर मेरे साथ है। वह सब देख रहा है। अवश्य ही फल देगा, ऐसा सोचकर पाप से रुक जाना, यह आस्तिकता का लौकिक पक्ष है। हमारा व्यवहार हमारे चारो तरफ व्याप्त वातावरण पर आधरित होता है। इस पतनोन्मुखी दौर में चारित्रिक पतन, भौतिकवाद व पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण, धनलिप्सा, असीमित आवश्यकताएं, सेक्सी फिल्में, अश्लील कार्यक्रमों एवं विज्ञापनों का प्रसारण सामाजिक बुराईयों को प्रोत्साहित करते हैं। सांस्कृतिक, सामाजिक व चारित्रिक उत्थान सदाचार, संस्कार व अध्यात्म को अपनाकर ही सम्भव है। भक्ति, ज्ञान और सकारात्मक सोच की पावन सलिला पुनप्रवाहित करने की महती आवश्यकता है। अपने अन्तर्मन में व्याप्त तिमिर को दूर कर सामंजस्य, सौहार्द, सदाचार व ज्ञान का दीप जलायें, जिसमें जीवन का कोना- कोना प्रकाशित हो उठे। जीवन को प्रभुभक्ति में सिंचित करें।

श्री विश्व शान्ति टेकड़ीवाल परिवार, ८६/९२, सीताराम पोद्दार मार्ग, मुम्बई

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

आ.ब्रह्मनारायण शास्त्री एम०ए० (वैदिक प्रवक्ता)

आ. शोभा शास्त्री (भजनोपदेशिका)

वेद, उपनिषद, गीता, रामायण के प्रवचन-भजन, यज्ञ (हवन), वेद पारायण यज्ञ एवं समस्त वैदिक संस्कारों को उत्तम रीति से सम्पन्न करवाने, योग एवं आर्य वीरांगना शिविर हेतु आमंत्रित करें।

ग्रा. व पो.- अमौली (महर्षि दयानन्द बाजार), जिला- फतेहपुर (उ०प्र०)- 212631 मो. 08009179588, 07860524398

www.thearyasamaj.org

नर-देह से व्योम्-देह तक की यात्रा

महात्मा चैतन्यमुनि

आज यदि हम कहें कि लोगों के पास भौतिक प्रसाधनों की किसी प्रकार की कमी है तो वह बात सत्य नहीं है। आज लोग निश्चित् ही भौतिक रूप में पहले से बहुत अधिक समृद्ध हुए हैं मगर यह भी सत्य है कि धनधान्य प्रचुर मात्रा में होने के बावजूद भी आज मानव पहले से अधिक असुरक्षित और दुःखी है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि व्यक्ति अपनी जीवन पद्धति को पूरी तरह से भूल चुका है। अधिकतर लोग इस बात से ही अनभिज्ञ हैं कि हमारे जीने का मकसद क्या है? और जब यही मालूम नहीं है तो फिर भला जीने के क्या मायने रह जाते हैं? आप किसी भी व्यक्ति से पूछिए कि भाई साहब आखिर यह सब दौड़-धूप आप किसलिए कर रहे हैं, तो वह इसका कोई भी सही-सही उत्तर नहीं दे सकेगा। यदि आज के मानव से जीने का कारण पूछा जाए तो प्रश्नकर्ता को ऐसे देखेगा मानों उससे कोई बेहद अप्रासंगिक प्रश्न पूछ लिया गया है। हमारे समस्त वेद-शास्त्रों ने इस मानव योनि को बहुत ही महत्वपूर्ण तथा देव दुर्लभ बताया है। वह इसलिए क्योंकि इसी योनि में हम यज्ञ, सत्संग, दान-पुण्य, साधना आदि कर सकते हैं। मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य उपासना करके उस परम पिता परमात्मा के सान्निध्य को प्राप्त करना बताया गया है। यदि इस योनि को भी हम मात्र खाने-पीने, सोने और मौज-मस्ती में ही बीता दें तो हममें और पशुओं में कोई अन्तर नहीं रह जाता है। इस योनि को कुकर्मों में बर्बाद करने का हमें कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ेगा, व्यक्ति कभी इस पर भी गंभीरता से विचार ही नहीं करता है। हम उपनिषद् की चेतावनी को भी स्मरण नहीं करते है, जहां कहा गया है-

इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति,
नचेहिदहाऽवेदीन्महती विनष्टिः।
भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति॥

(केन.उप. 2-5)

अर्थात् बुद्धिमान् लोग इसी जन्म में उस परमात्मा की खोज करके अमरत्व को प्राप्त हो जाते है मगर जो लोग मानव योनि पाकर भी परमात्मा को नहीं जान पाते हैं उनका तो मानों सर्वनाश ही हो जाता है...। ऋषि कहते हैं कि मानव योनि मिली ही परमात्मा की प्राप्ति के लिए है और जो इस स्वर्ण अवसर को खो देता है उससे तो यह मानव योनि भी छीन ली जाएगी तथा न जाने कितनी और कैसी-कैसी यानियों में भटकना पड़ेगा। इसलिए नर तन पाकर भी परमात्मा की उपासना न करना तो जैसे अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारने जैसा ही है। जिस दिन व्यक्ति इस मानव योनि का महत्व समझ लेगा उसी दिन से उसका जीवन संवारने की दिशा में अग्रसर हो जाएगा। हमें चिन्तन करना चाहिए कि केवल यही वह योनि है जहां पर हमें कर्म करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हैं, अन्य सभी योनियां तो मात्र भोग योनियां ही है। अतः हमें इसी मानव-योनि में प्रभु-प्राप्ति का पूरे मन से प्रयास करना चाहिए तथा इसके लिए योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। आसन- प्राणायामादि योगांगों का अनुष्ठान करके समाधि तक पहुंचने की योग्यता प्राप्त करने के लिए वेद कहता है-

ओ३म् यदीमृतस्य पयसा पियानो
नयनृतस्य पथिभी रजिष्ठैः।
अर्यमा मित्रो वरूणः परिज्मा
त्वचं पृंचन्त्युपरस्य योनौ॥

(ऋ01-79-3)

अर्थात्- जो मनुष्य (**यदीमृतस्य पयसा पियानो**) वेदवाणी रूपी गौ के दुग्ध का पान करता है, (**रजिष्ठैः**), छल-छिद्र से शून्य अर्थात् सरलता का जीवन जीता है, (**अर्यमा**) कामादि शत्रुओं का नियन्त्रण करता है, (**वरूण**) द्वेष का निवारण करता है, (**मित्रः**) सबके साथ स्नेह करता है, (**परिज्मा**) सब क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, वही (**उपरस्य योनौ**) धर्म-मेध के उत्पत्ति स्थान में (**त्वचं पृंचन्ति**) स्पर्श को प्राप्त करते हैं।

वेद का कहना है कि जो व्यक्ति **ऋतस्य**- वेदवाणीरूप गौ के दुग्ध का पान करता है अर्थात् वेद-स्वध्याय से 'सत्य-ज्ञान' को प्राप्त करता है, योगमार्ग पर उसकी गति होती है। बहुत से लोग अज्ञानतावश योग-मार्ग पर चल तो पड़ते हैं मगर सत्य-ज्ञान न होने के कारण वर्षों बल्कि कई-कई जन्मों तक भी उन्हें सिद्धि प्राप्त नहीं होती है क्योंकि न तो वे प्रकृति, आत्मा और परमात्मा के मूलभूत स्वरूप को जानते हैं और न ही उपासना की सही विधि को ऐसे अज्ञानी लोग समाधि तक नहीं पहुंच पाते हैं। दूसरी बात कही **रजिष्ठैःपथिभिः** जिनका जीवन ऋजुतम, छल-छिद्र से शून्य है अर्थात् जिसका जीवन देवत्व से परिपूर्ण है, जो कुटिलता आदि से दूर रहकर सरलता के मार्ग का पथिक बनता है। आगे कहा **अर्यमा** अर्थात् जो संयमी है। जिसने कामादि शत्रुओं का नियन्त्रण कर लिया है और इनका अनुकरण करने से जो सबका **मित्रः** अर्थात् सबके साथ स्नेह करने वाला बन गया है और **परिज्मा**- (परितःगन्ता) पूरी निष्ठा के साथ सब क्षेत्रों में अपने कर्त्तव्य का पालन करता है ऐसा व्यक्ति ही धर्म-मेध समाधि को प्राप्त कर सकने में समर्थ हो जाता है। वह प्रभु का प्रिय सखा बन जाता है। वेद में अन्यत्र कहा है-

ओ३म् हंसः
शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता-
वेदिषदतिथिर्दु रोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा
ऋतजा अद्रिजा ऋतम्॥

(ऋ04-40-5, यजु010-24)

भावार्थ- जो जीव उत्तम गुण, कर्म और स्वभाव वाले ईश्वर की आज्ञा के अनुकूल बर्ताव करते हैं वे ही परमेश्वर के साथ आनन्द को भोगते हैं। कठोपनिषद् में यमाचार्य आत्मा का उपदेश देते हुए कहते हैं कि जो अजन्मा-साधु इस शरीर को ग्यारह द्वारों की नगरी समझकर यह चिन्तन करता है कि जैसे ये द्वार बाहर को खुलते हैं वैसे ही अन्दर को भी,वह अपने अनुष्ठान से इस संसार में शोक में नहीं पड़ता...सदा के लिए मुक्त हो जाता है। उपरोक्त वेद का मन्त्र उपनिषद् में आया है (केवल अन्त में 'बृहत्' शब्द अधिक है) यमाचार्य कहते हैं कि यह जीवात्मा 'हंस' है, 'वसु' है,'होता' है और 'अतिथि' है। हंस जिस प्रकार शुद्ध-पवित्र स्थान में रहता है, वैसे हंस-रूप जीव भी शुद्ध ब्रम्ह में निवास करता है। अतिथि जैसे दुरोण-आश्रम की कुटिया को अपना समझकर नहीं बैठ जाता बल्कि अतिथि के रूप में रहता है, जीव भी इस कुटिया को अर्थात् शरीर को सदा के लिए अपना समझकर नहीं बैठता बल्कि अतिथि बनकर उत्तरोत्तर विकास करता है। इस तथ्य को इस प्रकार से भी समझा जा सकता है कि अपने इस शरीर-रूपी आवास में नर-देह में निवास करता है, नर से अच्छे वर-देह में निवास करता है, उससे भी अच्छे ऋत्-देह में वास करता है और फिर उससे भी उत्कृष्ट् व्योम-देह में वास करता है। इस प्रकार वह उत्तरोत्तर विकास करता जाता है,1. हंसः शुचिसद्-इसे नरदेह कहा गया है गुरूकुल में ब्रह्मचारी शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्ति तथा ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करते थे, वहीं दूसरी ओर आसन, व्यायाम, प्राणायाम आदि के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता और सत्य, न्याय, दया, संयम, यम-नियम आदि को व्यवहार में लाकर अपनी आत्मा का विकास करके हंस अर्थात् नीर-क्षीर विवेकी हो जाते हैं..., 2. वसु अन्तरिक्षसद्-वरदेह, गृहस्थाश्रम। जैसे अन्तरिक्ष अपने में अनेक ग्रह-उपग्रहों को बसाता है वैसे ही गृहस्थ भी अपना एक संसार बसाता है तथा दूसरों को बसाने में भी सहयोग करता है। गृहस्थाश्रम केवल भोग-स्थली नहीं है, बल्कि विवाह-संस्कार के अवसर पर गृहस्थ देश को उत्तम सन्तान देने और धर्मानुसार जीवन यापन करने के लिए पति-पत्नी प्रतीज्ञा लेते हैं...., 3. होता वेदिसद्-ऋत्-देह- वानप्रस्थाश्रम। अन्ततः व्यक्ति सांसारिक पदार्थों को त्यागकर अपना जीवन भी समाज को आहुत कर देता है। वह इस विवेक पर पहुंच जाता है कि अध्यात्म ही सत्य है.... परोपकार ही धर्म है... इन भावनाओं को आत्मसात् करके वह ऋत् बन जाता है, 4. अतिथि दुरोणसद्-व्योम् -देह-संन्यासाश्रम। पच्चहतर वर्ष की आयु पूर्ण हो जाने पर व्यक्ति पूर्णतः परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाता है.... उसका जीवन मानों प्रभु का ही हो जाता है.... भगवे वस्त्र इसीलिए पहने जाते हैं क्योंकि ये ब्रह्मग्नि के प्रतीक है। सन्यासी बनने के बाद व्यक्ति किसी प्रकार की सीमाओं में न बन्धकर पूरे संसार का हो जाता है। वह पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकेषणा से ऊपर उठकर पूर्णरूप से पावन पवित्र हो जाता है....यमाचार्य नचिकेता को वर देते स्वर्ग-साधक अग्नि के सम्बन्ध में कहते हैं-

त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य संन्धि
त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू।
ब्रह्मयज्ञं देवमीडयं विदित्वा
निच्चाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति॥
त्रिणाचिकेतस्त्रयतेताद्विदित्वा य
एवं विद्वाँश्चिनुते नचिकेतम्।
स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके॥

(कठो. 1-17, 18)

अर्थात् जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ-इन तीन आश्रमों में उपासना करेगा वह तीनों सन्धियों में से गुजरकर, तीनों कर्मों को करके, जन्म और मृत्यु को तर जाएगा। इन तीन सन्धियों से गुजरकर जो क्रम बनता है वह 'ब्रह्म-यज्ञ' कहलाता है। जो व्यक्ति दिव्यगुणों से युक्त, स्तुति के योग्य 'ब्रह्म-यज्ञ' को जान जाता है वह अत्यन्त शान्ति को प्राप्त होता है। तीनों नचिकेत अग्नियों को जो इस प्रकार जान जाता है और नचिकेत अग्नि का चयन करता है, वह आगे से मृत्यु के पाशों को काटकर, शोक से पार होकर, स्वर्ग-लोक में आनन्द से रहता है। यही तीन अग्नियों की सन्धियां है जिससे जीवात्मा अपने यथार्थ लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

वैदिक वशिष्ठ आश्रम,
महर्षि दयानन्द धाम,
महादेव, तह०-सुन्दरनगर,
जिला-मण्डी, हि.प्र.-174401

प्रवेश सूचना

उपदेशक महाविद्यालय टंकारा

प्रथम पाठ्यक्रम :- महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरियाणा) से मान्यता प्राप्त। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिये कक्षा सात उत्तीर्ण होना अनिवार्य हैं। आठवीं कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यम, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अध्यासक्रम हैं। जिसमें प्राच्य व्याकरण के उपरान्त वेद, दर्शन, उपनिषद् और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक बी.एड. अथवा अन्य परीक्षायें देकर सरकारी अथवा सरकार मान्य संस्थाओं में सेवा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रथम पाठ्यक्रम में उपदेशक कक्षायें चलती हैं जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकाण्ड विशेष रूप से सिखाकर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहां से उत्तीर्ण स्नातक आर्य समाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं। दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्य समाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो अधिक उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने हेतु आचार्य जी से पत्र-व्यवहार अथवा दूरभाष से जानकारी प्राप्त करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
टंकारा, जिला-राजकोट, गुजरात-363659
फोन नं. 02822-287756 मोबा. 09913251448

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

देशभर में वेदप्रचार तथा भजनोपदेश हेतु हमारी सेवाएं मण्डली सहित उपलब्ध हैं। वार्षिक उत्तव, वेदप्रचार सप्ताह, बोध सप्ताह तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर सेवा का अवसर दें। धन्यवाद,

पं. उमेश आर्य भजनोपदेशक

शिव कालोनी, गोविन्दगढ़, अलवर (राजस्थान)
मोबाइल नं0 - 09928437044, 08233140740

www.thearyasamaj.org

बालक अनमोल के जन्मदिन पर हुए यज्ञ का सुन्दर दृश्य -केसरी

ऋषियों की धरोहर यज्ञ को संभालें बच्चे

सुभाष आर्य
झज्जर (हरियाणा)

महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर में आर्यसमाज, वैदिक सत्संग मंडल एवं यज्ञ समिति झज्जर के संयुक्त तत्वावधान में बालक अनमोल सुपौत्र महाशय रतिराम आर्य के जन्मदिवस के शुभावसर पर यज्ञ-भजन-प्रवचन-अभिनन्दन समारोह हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

यज्ञ ब्रह्मा पं. वेदप्रिय आर्य की देखरेख में नम्रता, हिमांशी, वंशिका, नन्दिनी, हीना आदि छात्राओं ने वेद मन्त्रों का पाठ किया। बालक अनमोल एवं उनके माता-पिता (श्रीमती सोनिया एवं मुकेश आर्य) यजमान बनें। झज्जर शहर के प्रसिद्ध मौहल्ला टीला सिलानी गेट के याज्ञिक परिवारों के ५१ होनहार प्रत्येक विद्यार्थियों को आधा किलोग्राम मात्रा में विशेष हवन सामग्री तथा व्यवहारभानु पुस्तक से सम्मानित किया।

इस अवसर पर पं. रमेशचन्द्र कौशिक, लाला प्रकाशवीर आर्य, संगीतज्ञ सतीश रोहिल्ला, प्राध्यापक द्वारका प्रसाद, अध्यापिका सुमित्रा देवी आदि के प्रवचनों का सार बच्चों के जन्मदिवस समारोह को यज्ञ से प्रारम्भ की परम्परा का हमें प्रचार-प्रसार करना चाहिए, इससे बच्चे ऋषियों की विशेष धरोहर यज्ञ को संभालने में सफल हो सकेंगे। यज्ञ के माध्यम से बच्चों में त्याग की भावना विकसित होती है और त्याग भावना से ही व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र सुख-समृद्धि को प्राप्त होता है। इस अवसर पर उत्तराखण्ड त्रासदी से प्रभावित परिवारों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की गई।इस अवसर पर रोशनी, मामकौर, विद्यादेवी, कमला देवी, शीतल, सुमेधा, पं. जयभगवान, नन्दराम, मा. पनसिंह, विवेक, देवेन्द्र आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। मंच का संचालन सुभाष आर्य ने किया।

धूमधाम से मनाया ४०वां वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली (देवराज आर्यमित्र)। आर्यसमाज, हरिनगर का ४०वां वार्षिक उत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। श्यामवीर राघव ने मधुर भजनों से, तथा योगेन्द्र शास्त्री ने रोचक उपदेशों से सबके मन को मोह लिया। देवराज आर्य मित्र ने श्रोताओं से आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के बारे में प्रश्नों के उत्तर पूछे। सही उत्तर देने वाले को ५० रुपये का नकद पुरस्कार दिया। बच्चों को प्रस्तुतिकरण पर इनाम भी दिये। प्रधान जी के धन्यवाद व ऋषिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तुरंत आवश्यकता है

तुरन्त आवश्यकता है 'आर्यावर्त केसरी' समाचार-पत्र के लिए कार्यालय अधीक्षक व उपसंपादकों की। सेवानिवृत्त एवं अंशकालिक भी सम्पर्क करें-

डॉ० अशोक कुमार आर्य, अमरोहा। फोन नं० : 05922-262033, 09412139333

चैरिटेबल ट्रस्ट मोगा में चरित्र निर्माण शिविर

प्रतिनिधि
सुन्दरनगर (हि.प्र.)

महात्मा चैतन्यमुनिजी एवं यतिमां सत्यप्रियाजी ने पी मार्का सरसों के तेल के सुप्रसिद्ध उद्योग द्वारा संस्थापित देवीदास केवल कृष्ण चैरिटेबल ट्रस्ट में अपनी ज्ञानगंगा ९ से १६ जून तक प्रवाहित की। यह संस्थान मोगा निवासियों के लिए तीर्थ के समान हो गया है। वर्तमान में प्रमुख समाजसेविका बहिन इन्दु पुरीजी बड़ी ही श्रद्धा एवं उत्साह के साथ संस्थान की समस्त गतिविधियों को कार्यरूप देती हैं। १५० कन्याओं का चरित्र- निर्माण शिविर बहुत ही सफलता के साथ पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। एक ओर जहां कन्याओं को मूर्ति-कला, नृत्यकला, संगीत कला का अभ्यास कराया गया, वहीं दूसरी ओर उन्हें वैदिक मान्यताओं से भी संवाद की कक्षा में प्रशिक्षित किया गया।

महाशय निहाल चन्द्र को श्रद्धासुमन अर्पित

तुलसीराम आर्य
बठिंडा।

एस.एस.एन. आर्य हाई स्कूल रामां व आदर्श कन्या आर्य स्कूल रामां के संस्थापक व संचालक महाशय निहाल चन्द आर्य की बरसी हवन, यज्ञ द्वारा श्रद्धापूर्वक मनायी गयी। पुरोहित दीनानाथ ने यज्ञवेदी पर विराजमान महाशय जी के सुपौत्र विजय कुमार (सपत्नीक), देवराज (सपत्नीक) एवं विश्वबन्धु आर्य को वैदिक मंत्रों द्वारा आहुतियां डलवायीं।

महाशय जी ने अपने जीवन में किसी भी कार्य को छोटा या बड़ा नहीं समझा। उनके प्रेरणास्रोत स्वामी स्वतंत्रानन्द व स्वामी सर्वानन्द दीनानगर रहे। उनका जीवन एम तपोनिष्ठ महात्मा के समान शांतिमय रहा।

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com